CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वस्वभावोद्धार-सूत्र

(दृष्टिवाद)

१९०२८
6.4
१५४८
दिनांक.........
नरिया, (वा. वि. वि.)

श्रीराजराजेश्वर योग- प्रवक्ता: सूरजचंद डाँग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या.................. प्राप्ति-संख्या......................

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम सर्वस्वभावोद्धार-सूत्र

लेखक सूरजचंद डांगी

लेनेवाले का नाम	देनेकी तिथि	लेनेवालेका हस्ताक्षर	लौटानेकी तिथि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❀ श्रीं ॐ अर्हं ❀

श्रीराजराजेश्वर-योग

का

सर्वस्वभावोद्धार-सूत्र

[दृष्टिवाद]

दिट्ठिवाए णं सव्वभाव परूवणा आघविज्जइ

[श्रीनंदीजी]

प्रवक्ता : प्रकाशक : रचयिता

सूरजचंद डाँगी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजा, भेंट, दक्षिणा :— श्रद्धानुसार
प्रथम संस्करण
१०००
[गुरु-पूर्णिमा संवत् २०२१ विक्रम]

यस्मिन् सर्वं यतः सर्वं,
यः सर्वं सर्वतश्च यः ।
यश्च सर्वमयो नित्यं,
तस्मै सर्वात्मने नमः ॥

[महाभारत स्तवराज]

प्राप्ति स्थान :—

१. श्री राजराजेश्वर–प्रकाशन
बड़े मन्दिर के पास बड़ा घर, बड़ीसादड़ी (चित्तौड़गढ़)

सम्पादक

२. महाराजा शिवदानसिंह
शिवरति-प्रासाद, उदयपुर (राजस्थान)

कुन्दनमल माधवलाल डाँगी द्वारा
श्री वर्द्धमान प्रिं. प्रेस, निम्बाहेड़ा (राजस्थान) में मुद्रित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान
पुस्तक सं० ....

श्री सर्वेश्वर सर्वार्थना

सर्वेऽत्र सुखिनः संतु,
सर्वे संतु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु,
मा कश्चित् दुःखभाक् भवेत् ॥

मिथ्या मे दुष्कृतं

कर–चरण–कृतं वाक्–कायजं कर्मजं वा ।
श्रवण–नयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ॥
विहितमविहितं वा सर्वमेतद् क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शंभो ॥

—निगमागम-सार

श्री परमेश्वर परमार्थना

शिवमस्तु सर्व जगतः परहित निरताः भवंतु भूतगणाः ।
दोषाः प्रयांतु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥

—सर्वेन्द्र गीत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूलायाग्राय मध्याय, मूलमध्याग्रमूर्तये ।
क्षीणाग्र मूल मध्याय, नमः पूर्णाय शंभवे ॥

यं पृथक् धर्मचरणाः, पृथक् धर्म फलैषिणः ।
पृथक् धर्मैः समर्चन्ति तस्मै धर्मात्मने नमः ॥

निव्वुइ पह सासणयं, जयइ सया सव्वभाव देसणयं ॥

वे विरला संसार नेह निर्धन सूँ पाले ।
वे विरला संसार लाभ अरु खर्च सँभाले ॥
वे विरला संसार जीभ सूँ बोले मीठा ।
वे विरला संसार दान ज्यो करे अदीठा ॥
आपो मारे हरि भजे तन मन तजे विकार ।
औगुण ऊपर गुण करे वे विरला संसार ॥

(पूज्यप्रवर पितृदेव के नित्य पाठ में से)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ श्रीं ॐ अर्हं ॥

श्री चरणों में समर्पण

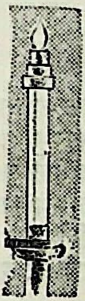

(१)

धन्य वड़ाला भैरविया–कुल–भूषण एकलिंगजी ख़्वास ।
केशरकुँवरि रूप धर प्रकटीं, भ्रमर–मातृ गाडरियावास ।।
आदि–मातृ–भू–धाम पधारीं बड़ीसादड़ी श्री जगदंब ।
प्रज्ञा चक्षु–धारिणी दादी, बन डाँगी–कुल की अवलम्ब ।।

(२)

तीर्थ मादरी–धाम बिराजित धन्य पगाऱ्या मगनीराम ।
जिनके घर में हुई अवतरित अद्‌भुत ग़ैबी शक्ति ललाम ।।
शाह हजारीमल्ल सुराणा वरी आवरी माँ के ग्राम ।
श्रीनाथी माँ कन्या देकर पाई शेष–नाग विश्राम ।।

(३)

दादी नानी के तपबल से दृष्टिवाद का फल पाया ।
सर्वस्वभावोद्धार सूत्र का पुण्य समर्पण मन भाया ।।
दादी–सुत नानी–जामाता, पिता सुभक्त अनन्य हुए ।
वंदन कर उन फूलचन्द को 'सूर्यचन्द' हम धन्य हुए ।।

—सूरजचंद डाँगी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अग्र-वचन

पुस्तक का नाम श्रीराजराजेश्वर-योग का सर्वस्वभावोद्धार सूत्र यानी दृष्टिवाद है जो प्रेमपूर्वक दुःखी प्राणियों के आँसू पोंछने में लगा रहे, वह उनके हृदय में बिराजमान होने से राजा कहलाता है। जो वर्तमान के कष्ट, भूतकाल के शोक वा भविष्य के भय का कारण काम राग मिटा सकता है वह राजेश्वर है और जो काम–राग के भी हेतुभूत अज्ञान एवं मिथ्यादर्शन को निर्मूल करने में सर्वथा समर्थ हो वही राजराजेश्वर है।

जो अपने संकुचित अहं को पुष्ट करने के लिए परिग्रह रखले वह राक्षस और जो देदे वह देव। जो बहुत देदे वह महादेव, जो सबकुछ देदे वह गुरुदेव और जो लेनदेन का अभिमान भी देदे वह देवाधिदेव ही राजराजेश्वर-योग का धनी है।

जो सङ्कट के समय आर्तध्यान के कारण हाय हाय करता हुआ रोता रहता है वह निर्बल होने से कनिष्ट श्रेणी का हैवान है। जो रौद्रध्यान के कारण दूसरों को रुलाने की सोचता रहता है वह दुष्टबल वाला दुर्बल होने से शैतान है। जो दूसरों के आँसू पोंछने के लिए प्रयत्न करता है वह धर्मध्यानी सबल होने से श्रेष्ठ इन्सान है एवं जो शुक्लध्यानी प्रबल परमेष्ठी है वह सबको सर्वत्र सदैव सर्वथा आनंदमय बनाने में संपूर्ण समर्थ होनेसे भगवान है—यही राजराजेश्वर है जिसके साथ विभक्त रहने–अलग होने से हम सदैव दु खी रहते हैं। भक्त का अर्थ है—लगे हुए और विभक्त कहते हैं विलग को। जो भगवान् श्रीराजराजेश्वर के भक्त हैं यानी सदैव संलग्न हैं—वियोगी नहीं योगी हैं, मिले हुए हैं वेही इस पद्य ग्रन्थ का मधुर-स्वाद ले सकते हैं।

ऐसे भक्तों के प्रति अपने सर्वस्व-भावों को समर्पित कर देने से सबके स्वभाव का उद्धार होजाता है। जो भिन्न-भिन्न दर्शन, धर्म, राष्ट्र, संस्कृति, राज्य तथा रीति–नीतियों के विविध पुष्पों को एक ही सूत्र में पिरोये हुए अनुभव कर लेते हैं वे ही दृष्टिवादी हैं। जो सभी विवादों को सहज रूप में मौन करके निर्विवाद रूप से प्रतिष्ठित हैं वे ही इस पुस्तक के लौकिक, लोकोत्तर व लोकोत्तम रस का पान कर सकतेहैं। यह अनुपम-रस प्रतिष्ठान से नहीं अनुष्ठान से ही उपलब्ध होताहै। ज्ञान-विज्ञान के यथार्थ पारमार्थिक उपयोग से ही उपभोग किया जा सकता है मिथ्याज्ञान या अज्ञान से नहीं। ज्ञान संश्लेषण पर निर्भर होने से बाहर और भीतर प्रकाश फैलाता हुआ निर्वाण की ओर ले जाता है और विज्ञान विश्लेषण की भूमिका से विकसित होकर नवनव निर्माण कराता है। ज्ञान योग पर निर्भर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है एवं विज्ञान विविध प्रयोगों पर। इस प्रकार जो योग-प्रयोग, विकास-प्रकाश, निर्वाण-निर्माण तथा संश्लेषण-विश्लेषण के द्वन्द्वों से ऊपर उठ कर सिर्फ एक तत्वस्वरूप का अनुभव करते हैं वे ही सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र्य सम्पन्न सर्वस्वभावोद्वार-सूत्र की आत्मा एवं राजराजेश्वर योग के स्वरूप में स्थिर हो दृष्टिवाद द्वारा सम्पूर्ण शांति का विस्तार करने में सन्नद्ध बने रह सकते हैं।

भारतीय द्वादशज्योतिर्लिङ्ग शङ्कर होने पर भी जब इस प्रकार की शांति का संरक्षण करने में असफल रहे तब एकलिंग के प्रताप ने इस आदर्श की रक्षा की और ज्योति-स्वरूपिणी शक्ति कालिकादेवी को चित्तौड़गढ़ पर प्रकटित करके महारानी पद्मिनी प्रमुख हजारों सतियों को धधकती हुई ज्वालाओं में बुला लिया।

तीन सजावे देशको सती संत अरु शूर। तीन लजावे देशको कुलटा-कपटी-क्रूर ॥

इन जौहरव्रत दीक्षित सतियों ने ही देश को सजाया। यही कारण है कि राजस्थान को पञ्जाब, सिंध, गुजरात, मराठा द्राविड़, उत्कल बंगाल आदि सभी प्रदेश 'भारत-भाग्य-विधाता' मानकर उसके नाम मात्र से ही संस्कृति-संरक्षण के लिए जाग्रत होजाते हैं। इसी धर्म-रक्षक प्रदेश का शुभाशीष मांगते और यश-गान 'जन गण.... ' गीत में गाते हैं।

बापा राउल की यह परंपरा महाराणा संग्रामसिंह और महाराणा प्रताप में अत्यन्त उत्कृष्ट रूप में अवतरित हुई। दोनों महाराणाओं का जीवनदीप जब धर्म युद्ध में बुझता हुआ दिखाई दिया तब श्री राजराजेश्वरी आदिमाताजी ने बड़ीसादड़ी से क्रमशः झाला अजा और झाला मान को भेजा जिन्होंने बाबर और अकबर के साथ युद्ध करते हुए धारा तीर्थ में स्नान किया। उन्हींके समान सङ्घवी डांगी महाजन गंगाशाह, नरसिंहशाह और गोविंदशाह ने भी अपने-अपने प्राणों की आहुतियाँ चढ़ाकर निम्नोक्त राज्य-घोषणा को उत्तम पद्धति से चरितार्थ किया।

जो दृढ़ राखे धर्मको तिहि राखे करतार। धन्य भील-क्षत्रीसहित धन्य शाहसरदार ॥

जिस प्रकार उत्तम धर्मव्यवस्था का आदर्श जगद्गुरु भारत के गौरव राजस्थान के मुकुटमणि मेधापत्तन मेवाड़नाथ एकलिंग के रूप में दिखाई दिया उसी प्रकार उत्तम अर्थव्यवस्था का आदर्श श्रीनाथ ने उपस्थित किया जिन्होंने गोवर्धन धारण करके यह बताया कि गोबर ही धन है। क्षत्रिय-कुल में उत्पन्न होकर भी स्वयं गोपालन किया और बड़ेभाई को हलधर बनाकर उत्तम वैश्य वर्ण के आदर्श को जीवनमें उतारा। जो अमरेन्द्र व अमेरिका की पूजा करके ट्रेक्टरों की शरण लेते हैं तथा बेङ्कबेलेंस को लक्ष्मी मानते हैं वे वेश्या को माता मानने का जघन्य पाप करते हैं। हमारी भारतभूमि तो पवित्र गोमूत्र और गोबर का खाद मांगती है लक्ष्मीमाता ने उसीमें निवास किया है यह हमारी शाश्वत यथार्थ पारमार्थिक प्रतीति है। जबतक इस विश्वास से हम भ्रष्ट रहेंगे तबतक अन्न के लिए परमुखापेक्षी ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बनेंगे और उत्कृष्ट गोरस से वञ्चित ही रहेंगे। इस अधमाधम डालडा-विकृतिको डालदो–यही राजर्षि चतुरसिंहजी ने कहा है— "सबते ऊँचो हरि कियो गोवर्धन गिरिधार। तातें ऊँचो आन कह ताको नीच विचार॥" उत्तम काम पुरुषार्थ का आदर्श चारभुजाजी हैं। दो भुजा माता और दो पिता की चतुर्भुज विवाह संस्कार द्वारा एक होकर ही संसार-संरक्षण का सूत्रपात होता है। मोक्ष-पुरुषार्थ का उत्तम आदर्श हैं श्रीकेशरियाजी परमहंस काले बाबा श्रीऋषभदेव जो धुलेव में प्रतिष्ठित है वे हमारे चरम आदर्श हैं। तभी तो अंतिम बलिदान के समय सभी सरदार केशरियाजी के रङ्ग में रँग जाते हैं। देश के तिरङ्गे झंडे में भी यही रङ्ग सर्वोपरि माना गया है। भगवां रङ्ग भी इसीका रूपांतर है। चारों पुरुषार्थों की जननी है श्रीराजराजेश्वरी भक्तिदेवी जो आदिमाता के रूप में बड़ीसादड़ी में प्रतिष्ठित है जहांसे इस पुस्तक का प्रकाशन होरहा है। इसी भूमि का नाम मादरी-धाम था। सभी भाषाओं में मातृ शब्द का उच्चारणभेद से लगभग यही रूप है। इसी मादरी को एकलिंग के राज्य में बड़ी बैठक होने के कारण बड़ीसादड़ी नाम दिया गया। इसमें रावण मँगरी और देवडुङ्गरी दो विभाग हैं। मध्य में दिक्काय ऋषभदेव की श्याम श्वेत दो प्रतिमाएँ हैं जो अनेकांत सिद्धांत की घोषणा करती हुई प्रवृत्ति निवृत्ति के यथार्थ उपयोग का रहस्य बताती हैं। तांडवनृत्यकारी नटराज निवृत्ति-नाथ शोभनाथ हैं जो पश्चिम की ओर रावणमँगरी के निकट विराजमान हैं और पूर्व की ओर रासनृत्यधारी नटनागर कृष्ण वाटिका के कृष्ण और प्रवृत्तिनाथ मधु-सूदन शेषनारायण श्रीचारभुजाजी हैं जो देवडुङ्गरी के पास बड़े मंदिर में विराजे हैं। उन्हींकी छाया में इस राजराजेश्वर-प्रकाशन का बड़ा घर बना हुआ है जहाँ से सामने श्रीहनुमानजी का मङ्गलमय महावीर दर्शन होता है। आसपास सुन्दर सरोवर और वापिकाएँ हैं। पृष्ठभूमि पर विशाल राज्यप्रासाद खड़ा है जहां श्रीपीतांबरराय और आदिमाताजी के देवालय भी हैं। श्रीआदिमाताजी नव शक्तियों की मूल स्वरूपिणी होनेसे राजराजेश्वरी कहलाती है। नवशक्ति के नवभावों को ही नव तत्व के रूप में आख्यान करने के लिए इस सूत्र का प्रकाशन होरहा है। श्रीराज राजेश्वरी के सन्मुख नवभावों का दरबार भरा है जहां एकएक भावके लिए चौदह चौदह सिंहासन बने हुए हैं उन्हीं का साक्षात्कार करके इस सूत्र की रचना का उपक्रम किया गया है।

मैं सारे परिवार सहित अपनेआपको कृतकृत्य मानता हूँ कि इस सर्वस्व-भावोद्धार सूत्र द्वारा सभी पूर्वजों का सर्वस्व भाव से सभी प्रकार का श्राद्ध-तर्पण होगया है। इस परमानंद का श्रेय श्रीराजराजेश्वर प्रभु का अनुग्रह ही है अतः उनको अनंत वंदना करता हुआ विराम लेता हूँ।

गुरु पूर्णिमा २०२१] —सूरजचंद डाँगी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❀ श्रीं ॐ अर्हं ❀

मंगलाचरण

**

राजुर रणथंभौंर ऋद्धिवर, राणक ऋषभ सिद्धि के देव !
राम-रूप, रूणीजा-राउल, धर्म धुरंधर धणी धुलेव !!
बाउल, बुद्ध, सिद्ध; गुरु, राउल, सहज, राजराजेश्वर-योग !
मंगल-जय, श्रीनाथ-अनुग्रह मिले निरन्तर निर्मल भोग !!

धन्य अजारी शारदा, सिद्ध-टेक गणराज !
मंगलमय वंदन सदा, सूर्यचन्द सुख-साज !!

योगिराज राजर्षि चतुर गुरु रामझरोखा के राजेश !
बुद्ध सूरि राजेन्द्र जवाहिर सिद्ध-पन्थ-स्वामी करुणेश !!
चौथमल्ल बाउल-पथ-गामी राउल निर्भय नाथूराम !
राजयोग-धर राजचन्द्र जय, राधाकृष्ण नाथ-गुण-धाम !!

—सूरजचंद डाँगी

शिवदात्री शिवदान को, अमिय सँजीवन मूरि !
भूरि भूरि प्रणवौं सदा, सहज योगिनी भूरि !!

—शिवदानसिंह, शिवरति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ श्री राजराजेश्वर–योग का मूल

जिन–मन्दिर में बसत है, छबि मन्दिर घनश्याम ।
उनकी शोभा क्या कहूँ, धाम धाम में धाम ।।

—राजर्षि चतुरसिंह

शिव, अज, शुक-सनकादिक नारद । जे मुनि ब्रह्म विचार विशारद ।।
सब कर मत खगनायक एहा । करिअ राम पद पङ्कज नेहा ।।

—गोस्वामी तुलसीदास

ॐ जय जय गुरु गुरु राम राम ॐ ।। श्रीं जय जय गुरु गुरु राम राम श्रीं ।।

जय जय वर्द्धमान हनुमान । दोनों महावीर गुणखान ।।
गुरु गुरु ऋषभदेव श्रीनाथ । दोनों एक चतुर्भुज साथ ।।
राम राम रूपेश गणेश । ॐ इकलिङ्ग राज राजेश ।।
आदि मातृ–भू श्री जगदम्ब । पीताम्बर प्रभु की अवलम्ब ।।
सूर्यचंद्र का सत्यप्रेम । सदा सर्व विधि कुशलक्षेम ।।

—सूरज चंद डाँगी

रें'ह्वे राघवराज, लाराँ नितप्रत लाड़लो ।
राखे म्हारी लाज, चढ़ पङ्खाले चतुर्भुज ।। (१ राजर्षि-योग)
गुमन्यो घोड़ो राम रो, राम हि हाथ लगाम ।
बाँधे छोड़े रामजी, खान–पान दे राम ।। (२ राउल–योग)
राम झरोखे बैठ के, सबका मुजरा लेत ।
जैसी जिसकी चाकरी, वैसा उसको देत ।। (३ बाउल योग)
सुमिरन ऐसा कीजिए, खरे निशाने चोट ।
कबिरा अजपा जाप जप, हिले न जिभ्या होट ।। (४ सिद्ध-योग)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है कहूँ तो है नहीं, नहीं कहूँ तो है।
है अरु नहिं के बीच में, जो कुछ है सो है ॥ (५ बुद्ध-योग)
साँस साँस रटते रहो, वृथा साँस मत खोय।
ना जाने फिर साँस का, आवन होय न होय॥ (६ सहज-योग)
कोटि कोटि रवि चंद से, अधिक सदा उद्योत।
ऐसी लगन लगाइये, मिले ज्योत में ज्योत॥ (७ नाथ-योग)
जल में घट घट में जल रहता बाहर भीतर पानी।
घट गल गया रह गया जल-जल कबिरा जुगुति पिछानी॥
गुरु किरपा जा नर पर कीन्हीं, तैं यह जुगति पिछानी।
नानक लीन रह्यो गोविंद सौं, ज्यों पानी में पानी॥ (८ जय योग)
मिट्टी ओढावन मिट्टी बिछावन, मिट्टी में मिल जाना होगा।
कहत कबीर सुनो भइ साधू, सद्गुरु नाम ठिकाना होगा॥
माटी कहे कुम्हार को, तू क्यों गूँधे मोय।
इक दिन ऐसा आवसी, मैं गूँधूँगी तोय॥ (९ गुरु योग)

जो वठे वो ही अठे, कठे और है और।
भाव होय तो है भड़े, दूज्यूँ दौड़ादौड़॥
वो भव में भटके नहीं, ठीक समझ ले ठौर।
पग मेल्यां पेलां करे, गेला ऊपर गौर॥
क्यूँ कूदाकूदी करे, मूँदामूँदी आंख।
सूघासूधी देख ले, जूदाजूदी न्हांख॥
आंख्यां रा औंगुण मिटे, सूरज रे दरसाव।
भींत-भड़ाका छोड़ ने, काका रा गुण गाव॥
मानो के मानो मती, केणो म्हारो काम।
कीका डाँगी रे अठे, रमता देख्या राम॥

—राजर्षि चतुरसिंहजी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीराजराजेश्वरी आदिमातृ-भू-परम-सेविका प्रकृतिदेवी
जगज्जननी की मातृभाषा में :—

परमेष्ट-प्रार्थना

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

चंदा सूँ निर्मलतरा, रवि सूँ अधिक पगास ।
सागर सूँ गहरा वरा, सिद्धा सिद्धि उजास ॥

—सूरजचंद डाँगी

चंदा सम शीतल सरस, प्रतिभा सूर्य समान ।
रे'हृे सदा अमान है, चातुर–भक्त महान ॥
करे अनोखी सूझ रो, सेवा में उपभोग ।
सोना और सुगन्ध रो, मिल्यो अेकठो जोग ॥

—शिवदानसिंह, शिवरति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री राजराजेश्वरयोग का—

सर्वस्वभावोद्धार-सूत्र

[दृष्टिवाद]

(१)

श्री सर्वेश्वर एक तत्व विभु, कालातीत सहज विस्तार ।
लोक चतुर्दश-रज्जु-प्रमाणित, सकल अलोक अनन्त अपार ॥
लोकोत्तर शाश्वत स्वभाव है, ब्रह्मालय लोकान्त विशाल ।
वैमानिक ज्योतिष्क भुवनपति सुर व्यंतर शुभ भाव रसाल ॥

(२)

महत्–कुभाव नरक–तिर्यङ्-मय, सर्वभाव–मय मनुज बने ।
परम–भावमय सर्व साधुजन विश्वभाव–मय जीव घने ॥
जगत्भाव प्रियभाव–युक्त वैभव सर्वत्र विराज रहा ।
शुद्ध–भावमय चौदह पूर्व सूत्र मनु रत्न विचार कहा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

उत्पादाग्रयणीय वीर्य, सत्संख्या क्षेत्र क्रमिक जानें।
अस्ति–नास्तिमय ज्ञान सत्य स्पर्शन कालांतर पहचानें ॥
आत्म–कर्म भावाल्पबहुत्व कार्य–कारण–संतति समझी।
अष्ट पूर्व में अष्ट द्वार से, अष्ट कर्म दुष्कृति उलझी ॥

(४)

प्रत्याख्यान त्याग निर्देशक, विद्या स्वाम्युत्सर्गाचार।
प्रतिक्रमण वन्दन कल्याणक, प्राणापाय साधनाधार ॥
स्थिति स्तुति क्रिया-विशाल विधात्री लोकबिन्दु समवृत्ति कहीं।
पूर्वावश्यक द्वारा लेश्या चक्र ग्रन्थियाँ सुलझ रहीं ॥

(५)

ज्ञान दर्शनावरण वेदना मोह नाम वय कुलांतराय।
प्रकृतिबन्ध की विश्व सृष्टि में विभव वृष्टिमय विषय कषाय ॥
निज पर निश्चय सम्यग्ज्ञान विभेद–रहित दर्शन जाना।
शिव सुख सुन्दर सत्य प्रेम सर्व–स्वभावमय पहिचाना ॥

(६)

माता पिता पुरोहित स्वामी, गुरु–काका मामा–प्रिय–देव।
बन्धु मित्र जीवेश्वरात्म सुख प्रज्ञा सत्य प्रेम स्वयमेव ॥
अष्ट परात्पर कारण कार्य सूक्ष्म षट् साध्य–साधनाधार।
नवम जीव ऐश्वर्यभाव साधक–निर्णायक निगम निहार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७)

निगम समन्वित अगम तत्वमय निज बल प्रबल प्रबुद्ध बने ।
आगम अनुगम के अधिगम सद्गुरुगम पाकर शुद्ध बने ॥
तुरग विहंगम भुजग कुरंगम सम न वृत्तियाँ लुब्ध बनें ।
स्वयंबुद्ध सत्संगम कर प्रतिगम विगमोद्गम रुद्ध बनें ॥

(८)

द्रव्यार्थिक सामान्य ग्रहण संग्रह अथवा विशिष्ट व्यवहार ।
सरल सत्य ऋजुसूत्र वर्तना वर्द्धमान शब्दागम तार ॥
समभिरूढ व्युत्पत्ति अर्थमय एवंभूत प्रवृत्ति चली ।
मति श्रुति अवधि मनःपर्यय कैवल्य ज्ञानमय प्रमा भली ॥

(९)

असद्भूत उपचर अनुचर-मय सत्यभूत निश्चय व्यवहार ।
द्रव्यभाव सविकल्प कल्पना-रहित वितर्क एक अविचार ॥
पृथक् भाव सविचार तर्क तज सूक्ष्म क्रिया बनती अविकार ।
व्युपरत योग क्रिया अविनाशी अचल निरंजन का सञ्चार ॥

(१०)

महत् जगत् प्रिय विश्वभाव का मोह महा मिथ्यात्व कहा ।
शुद्ध और शुभ का कदाग्रही मिश्रभाव में बना रहा ॥
परमभाव का राग हुआ सम्यक्त्व-मोह का उदय यही ।
सर्वभाव का पक्ष हमें निःपक्ष बोध दे रहा सही ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११)

भटकन लटकन अटकन छूटी पक्ष विमुक्त हुआ जाना।
इसीलिए सत्तत्व स्पर्शना निज स्वभाव हमने माना॥
खटका खेद अखिल जीवों का जब हृदयामृत द्रवित हुआ।
यथाप्रवृत्ति चली तब हममें निज अपूर्व रस स्रवित हुआ॥

(१२)

यों अनिवृत्तिकरण साधन से परम दया मन में झलकी।
दिखी एकता धर्ममूल रस पत्र पुष्प शाखा फल की॥
गुण प्रमोद मध्यस्थ भाव से समस्त जीवन व्याप्त हुआ।
'मिथ्या मे दुष्कृतं' मान अनुबन्ध-अनन्त समाप्त हुआ॥

(१३)

विषय विकल्प विश्व रुचि अपनी सर्वेश्वर सङ्कल्प बनी।
इन्द्रिय निज-निज सुर में निश्चल चंचलता अति स्वल्प बनी॥
संस्कृत मन विचार में विहरा दुर्विकार संहार हुआ।
बुद्धि पराभव त्याग किया जब निज अनुभव विस्तार हुआ॥

(१४)

अहङ्कार समता में पलटा ममता मद निर्मूल हुआ।
चित्त नित्य चिन्मय स्वभाव में आत्मा के अनुकूल हुआ।
हृदय विभाव दूर कर अपना सर्वभाव संलग्न रहा।
जीव ज्ञान-दर्शन में रम कर निज पर्याय निमग्न रहा॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१५)

आत्मा केवल ध्रुव स्वभावमय परम तत्त्व स्वीकार किया।
अपने में ही अपनेपन का स्वगत विभव व्यवहार किया।।
सहज स्वतन्त्र सदैव सर्वथा सार्वत्रिक सञ्चार किया।
सर्वेश्वर के सर्व-रूप का शिव सुन्दर शृङ्गार किया।।

(१६)

विषयों को परभाव समझ कर धन जन का सम्मोह हरा।
इन्द्रिय विश्व बंध तज मन में पुण्यभाव भरपूर भरा।।
बुद्धि स्वभाव रूप बन करके महद्-कुभाव प्रहार किया।
चित्त छोड़ कर जगद्भाव को चैत्य तत्व स्वीकार किया।।

(१७)

सर्व-भावमय हृदय विराजित शुद्ध भावमय जीव रहा।
आत्मा परमभाव में स्थिर रह निजानन्द रस नित्य बहा।।
ज्ञान सत्यमय प्रेम तत्व अपनी ध्रुव लीला में लहरा।
भेदाभेद-दुराग्रह छोड़ा भावातीत स्वरूप वरा।।

(१८)

दीखूँ दीखूँ दूखा दिल में देखूँ देखूँ तत्त्व खरा।
खेल खेल में खिलूँ खुलूँ अब करूँ धरूँ यह भाव हरा।।
अन्नमयादि कोश पहचाने विश्व जगत् मम को बिसरा।
महत् भाव परभाव छोड़ कर परमभाव में पड़ निखरा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१९)

ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय संज्ञा तज ज्ञप्ति रूप में तृप्ति हुई ।
दाता दान देय भी देकर कदा न किंचित् दृप्ति हुई ॥
दृष्टा दर्शन दृश्य त्रिपुटियाँ केवलदर्शन क्लृप्ति हुई ।
प्रभु प्रज्ञप्ति ग्रहित गणधर से व्याख्यामयि विज्ञप्ति हुई ॥

(२०)

सर्वभाव की सत्प्ररूपणा दृष्टिवाद का सार मिला ।
परिकर्मादिक पंचदृष्टि परमेष्ठि पंच का तार मिला ॥
सिद्ध-श्रेणिका मातृपदादिक सर्वभाव स्वीकार मिला ।
सूत्र पूर्व अनुयोग चूलिका नन्दी का आधार मिला ॥

(२१)

सामायिक परिकर्म दृष्टि में ईर्यापथिकी क्रिया पली ।
मोक्षमार्ग तत्वार्थ सूत्रगत शक्रस्तव चूलिका चली ॥
पंच पदों के नमस्कार में सकल पूर्वगत सत्व मिला ।
शाश्वत चतुर्विंशतिस्तव में सत्र अनुयोग महत्व मिला ॥

(२२)

यों लीलामयि-निज-पर प्रज्ञा दृष्टि-प्रवादाधीन बनी ।
द्रव्य भावमय बल प्राणों में सुरति सदा तल्लीन बनी ॥
भक्तियोगमय सदाचार से विरति-विवेक जगे मन में ।
तत्व सगुण साकार रूप धर इस विधि प्रकटे जीवन में ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परम भाव

(२३)

श्रोत्रेन्द्रिय–बल–प्राण प्रतिष्ठित मातृभाव पंचेन्द्रिय जात ।
सिर पर कुम्भ सुशोभित अम्बा उस पर मल्लिनाथ विख्यात ॥
नयनेन्द्रिय पितृभाव प्रतिष्ठित सत्यप्रेमी मानव गोत ।
माधव कर में डाँग शङ्ख पर श्यामल नेमनाथ उद्योत ॥

(२४)

रसनेन्द्रिय बल प्राण प्रतिष्ठ पुरोहित सर्वभाव सिद्धान्त ।
गणपति वासुपूज्य स्वामी का प्रिय दर्शन सम्यक्–एकान्त ॥
मन बल प्राण प्रतिष्ठित स्वामी अनेकान्त जिनशासन ताज ।
चन्द्रमौलि प्रभु महादेव देवाधिदेव चन्द्र–प्रभ राज ॥

(२५)

भाले वचन बल प्राण प्रतिष्ठित निज गुरु तत्व तिलक शृंगार ।
ब्राह्मी सुन्दरि आदि–मातृभू सम्प्रदाय निर्ग्रन्थ विचार ॥
अमराम्बिका अयरवा काली आशावरि माँ सीता धाम ।
सारे जग को दिया जिन्होंने सर्वभाव का पाठ ललाम ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२६)

कण्ठ काय बल प्राण प्रतिष्ठित मामा देव सङ्घ निर्धार ।
श्री शङ्खेश्वर कृष्ण सुपूजित पार्श्वनाथ स्थापित अवतार ॥
धर्मधुरंधर एकलिंग विभु गोवर्धनधारी श्रीनाथ ।
रूपेश्वर रघुराज चतुर्भुज मुक्तेश्वर केशरिया साथ ॥

(२७)

घ्राणेन्द्रिय बल प्राण प्रतिष्ठित मित्र भाव श्रमणों का गच्छ ।
राम पद्म–बलभद्र सुसेवित मुनिसुव्रत आदर्शित स्वच्छ ॥
स्पर्शेन्द्रिय बल प्राण प्रतिष्ठित बड़ सज्जनता ध्येय रहा ।
बन्धुभावमय ज्ञाति महाजन ज्ञातृभाव भी ज्ञेय रहा ॥

(२८)

ऋषभादिक प्रभु स्वर्णवर्णमय भुजबल में लोकोत्तम स्थान ।
व्यासादिक ऋषिराज विराजित लौकिक लोकोत्तर गुणखान ॥
नाभि–केन्द्र में प्राणापान समान श्वास–उच्छ्वास कहा ।
जीवभाव चौबीस–पन्थ प्रभु पार्श्वनाथ हरिवास रहा ॥

(२९)

दर्शन और वीर्य प्राणों में पद्मप्रभ का प्रत्यभिज्ञान ।
सूर्य किरणमय लाल सरोवर विकसित पद्म चरणतल ध्यान ।
उत्तमांग के ब्रह्मरन्ध्र में दया–धर्म परमात्म विलास ।
भ्रमर गुहामृत त्रिकुट घाट पर मूल महा मिथ्यात्व निरास ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३०)

आसनस्थ सुख ज्ञान प्राण में सुविधिनाथ संधान करें।
हिन्दू संस्कृति ब्रह्मदेव विधि नित्य निगम का गान करें॥
दिव्य-ज्योति आनन्द-भाव में परम-हितैषी भारत देश।
सत्य सौख्य-प्रद परम प्रभा से चिन्ता भ्रान्ति नहीं लवलेश॥

(३१)

भ्रूमध्यस्थ प्रतिष्ठित युक्त दृष्टि आयुष्य प्राण जाना।
वर्द्धमान नरसिंह स्वरूपी तीर्थ दियाणे पहचाना॥
ऋषभ-कृष्ण के आर्यक्षेत्र में मधुर प्रेम रस अनुसन्धान।
यों आदेश चक्र की स्थिति में प्रिय प्राणों का ध्रुव बलिदान॥

शुद्ध भाव

(३२)

शुद्धा माँ अनसूया ने अनुपम सतीत्व को प्रकटाया।
शुद्ध पिता ऋषि अत्रिदेव ने गुणातीत रस बरसाया॥
शुद्ध पुरोहित गर्गसूरि से श्रीमाधव को ज्ञान मिला।
अष्टावक्र विशुद्ध स्वामि से श्रीविदेह का बोध खिला॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३३)

काका सद्गुरु रुक्मांगद से तत्त्वनिष्ठ सद्भक्ति मिली।
मामा उद्धव मित्रार्जुन से उज्ज्वल जीवन–शक्ति मिली ॥
बन्धु भरत शांडिल्य भक्त से निर्मलतम अनुरक्ति मिली।
शुद्धेश्वर जमदग्निदेव से योग–युक्ति अभिव्यक्ति मिली ॥

(३४)

शुद्धात्मा ऋषि अम्बरीष के सकल परिश्रम सफल हुए।
शुद्धानन्दी धन्य पराशर ब्रह्मलीन भी सजल हुए ॥
शुद्ध ज्ञान श्रीकुन्दकुन्द का समयसार सर्वस्व बना।
शुद्ध सत्य निमि विदेह सन्मुख हेतु–देह भी ह्रस्व बना ॥

(३५)

शुद्ध प्रेम संगीत सुधाकर परम यशस्वी भक्त मिले।
श्री हरिदास त्रासहर स्वर से अन्तरंग के कुसुम खिले ॥
शुक पुराण बाल्मीकि काव्य से प्रेम पराग प्रकट आया।
शुद्ध प्रेममय आत्मिक रस शाश्वत अम्बर से बरसाया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभ भाव

(३६)

ब्रह्मवादिनी गार्गी माँ पितु याज्ञवल्क्य शुभ सन्त मिले।
अगम अवाच्य तत्त्व के वक्ता अनुपम मान्य महन्त मिले॥
विश्वामित्र पुरोहित से शुभ बुद्धि प्रेरणा नित्य बनी।
शुभ स्वामी श्री विदुर नीति से न्याय दृष्टि आदित्य बनी॥

(३७)

नर नारायण शुभ गुरु में तप ब्रह्मचर्य साकार मिला।
मुद्गल मण्डुक मृकण्ड मातुल शुभ मंगल आधार मिला॥
ऋषि सुतीक्ष्ण शुभ मित्र प्राप्ति से जीवन का उद्धार मिला।
श्री राजेश्वर-दर्शन से, गुरु-अगस्त्य को भी प्यार मिला॥

(३८)

मुक्ति-बंधु सोपान यज्ञमय निवृत्ति पथ को विकसाया।
रामदेव प्लेटो अरस्तु ने जीव शक्ति को प्रकटाया॥
श्री ऋभु पुलह पुलस्त्य शुभात्मा वेद मूल फल सम्भाला।
रामानन्दी शुभानन्द ने जिसका रस बरसा डाला॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३६)

ज्ञानमूर्ति हरिभद्र हरित ने शुभ दर्शन का मेल किया।
शिवि पृथु ने शुभ सत्यभाव से तन का अद्भुत खेल किया॥
रामचरण रैदास संत ने मद का पातक भगा दिया।
नामदेव शुभ प्रेम मन्त्र ने मन में मंगल जगा दिया॥

जगद्भाव

(४०)

जगन्मातृ कमला लक्ष्मी ने जगत्पिता हरि वर पाया।
जगत्पुरोहित भृगु चरणों को वक्षस्थल पर धरवाया॥
जग-स्वामी इक्ष्वाकुराय ने सारी सुविधा दिलवाई।
धन्य जगद्गुरु भरत बाहुबलि माया की जड़ हिलवाई॥

(४१)

जग मातुल श्री रंतिदेव ने त्रिभुवन का दुख दूर किया।
जगन्मित्र श्री विष्णुचक्र ने कृत्या: को चकचूर किया॥
जगद्बन्धु लक्ष्मण अनन्त ने सिर पर जगत् सँभाल लिया।
अपने मन की मृदु शैया पर जगत्पाल को पाल लिया॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४२)

जय जगदीश्वर मुनि कश्यप का हमें आद्य आधार मिला।
जगदात्मा अगस्त्य भृङ्गी से संरक्षण समुदार मिला॥
असुरपाल संजीवन-ज्ञानी शुक्राचार्य महान हुए।
महदानन्द भाव निर्माता भरद्वाज गुणखान हुए॥

(४३)

सत्य वज्र हित अस्थिदान में ऋषि दधीचि असमान हुए।
जगत्प्रेम निर्मल प्रतिभा के जनक पुण्य पहचान हुए॥
गुण विभाव पर महद्भाव से जगद्भाव आस्रव आया।
विभव वृष्टि से विश्व सृष्टि कर प्रकृति बन्ध को दिखलाया॥

विश्व-भाव

(४४)

मातृ भूमि, जल जनक, पुरोहित अग्नि, वायु स्वामी विख्यात।
गुरु आकाश, विश्व-मन मामा, मित्र बुद्धि, मम बंधु सुहात॥
ईश्वर जीव, मुक्त विश्वात्मा, भक्त विश्व आनन्द मिला।
सिद्ध बुद्ध में विश्व-ज्ञान का वैज्ञानिक सन्धान खिला॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४५)

विश्व सत्यमय ब्रह्म भान कर विश्व प्रेम ध्रुव तत्व कहा ।
इस प्रकार से खुला बन्ध जब शुद्ध भाव शुभ सत्व रहा ॥
सत् के भाव सत्व ध्रुव गुण में व्यय उत्पाद संग रहता ।
तत् के भाव तत्व में केवल ध्रौव्य एकता को गहता ॥

(४६)

ग्राहक ग्राह्य ग्रहण निरपेक्ष अनुग्रह केवल थहिति कही ।
केवल दृक् प्रज्ञप्ति मात्र अव्यक्त व्यक्ति अभिव्यक्ति कही ॥
सर्वभावमय बीजाक्षर में संवर ॐ अव्यय आया ।
पुण्य वरम् नूनम् निर्जर शम् नित्य शान्तिमय कहलाया ॥

(४७)

पुण्य अनुग्रह से निग्रह कर सम्यक्–ग्रह सन्देश सुना ।
तीर्थङ्कर का पुण्यादेश निर्जरा का उद्देश्य चुना ॥
स्वयं अरे, अर्हं भूला किम्, अलम् कथम् एवं बन्धा ।
निजी उपग्रह विग्रह आग्रह परिग्रही संग्रह अन्धा ॥

(४८)

तज उपदेश स्वदेश विदेशी दुर्देशी निर्देश मिला ।
दुर्बन्धन के इस कुदेश में चिर–संचित विश्वास हिला ॥
हृष्टि तुष्टिमयि इस समष्टि में दृष्टि पुष्टिमयि वृष्टि हुई ।
बन्ध सृष्टि को तोड़ व्यष्टि यह परम शक्ति परमेष्टि हुई ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महद्भाव

(४६)

माँ मोहिनि ने श्री रखिया ब्लेवेस्ट्की को भी प्यार किया ।
महत्‌पिता मुचुकुन्दराय ने कालयवन पर वार किया ॥
मिले बृहस्पति महत्‌पुरोहित विश्व-विभूति मर्म पाया ।
महत्‌स्वामि दादूदयाल का निश्चल सुन्दर मन भाया ॥

(५०)

भीष्म पितामह महद्भावमय गुरुवर पक्के भक्त मिले ।
जिनके प्रण को पूर्ण बनाने हरि असत्य अनुरक्त मिले ॥
शर-शैया पर सोये-सोये शान्तिपर्व मंगल गाया ।
कौरव पाण्डव यादव सबने, दुःख द्वन्द्व भय बिसराया ॥

(५१)

ऋषि अंगिरा च्यवन मामा ने तप का तेज प्रसिद्ध किया ।
महा मित्र मांधाता नृप ने तन मन बल समृद्ध किया ॥
महा बन्धु सुग्रीव बालि से सारे निगम निहाल हुए ।
जीवेश्वर अक्रूर भगीरथ भारत की ध्रुव चाल हुए ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५२)

श्री मरीचि की महदात्मा ने प्राणि सृष्टि विस्तार किया।
महदानन्द गोद में लेकर श्री नृसिंह ने प्यार किया॥
यों प्रह्लाद प्रसाद प्राप्त कर दैत्य वर्ग भी सुख पाया।
सिद्धसेन ने महत्ज्ञान का सम्यक्–गौरव फैलाया॥

(५३)

श्री गौतम सिद्धार्थ बुद्ध को साक्षात् महत् सत्य भाया।
महत् प्रेम में पुण्डरीक का अविचल मंगल यश छाया॥
धन्य–धन्य द्विजराज सुदामा प्रेमी पर मन वार रहे।
करुणा हृदय हरि नयनामृत से जिनका चरण पखार रहे॥

प्रिय भाव

(५४)

सर्वोत्तम–नैवेद्य–विधात्री धन्य हुई शबरी माता।
कन्फ्यूशस प्रिय पिता हमारे फैलाई शिव सुख साता॥
श्री जरथुस्त पुरोहित ने मन वचन काय को शुद्ध किया।
प्रिय स्वामी मंसूर अनलहक सोऽहं ब्रह्म प्रकाश दिया॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५५)

गुरु नानक के सत् अकाल से महाकाल भी थर्राया ।
हज़रत नबी मुहम्मद मामा मित्र मसीह शरण पाया ॥
कार्लमार्क्स लेनिन सुबन्धु ने शोषित जन का त्राण किया ।
धन्य प्रियेश्वर हज़रत अलिसुत हसनहुसन बलिदान दिया ॥

(५६)

श्री लाओत्स प्रियात्मभाव से 'ताओ' का अनुभव पाया ।
प्रियानन्दमय मध्व हमारे भेद भक्ति का सुख छाया ॥
सौक्रिटीज़ निम्बार्क ज्ञानमय द्वैताद्वैताचार्य हुए ।
श्री शङ्कर के ब्रह्म सत्य से महिमामय सब आर्य हुए ॥

(५७)

रामानुज की भक्ति विशिष्टाऽद्वैत तत्व विज्ञान बना ।
वत्सलता प्रेरित वल्लभ का शुद्धाद्वैत विधान बना ॥
पुष्ट प्रेम से श्री पीपा ने सहभावी नाता जोड़ा ।
श्री लोंका ने जीव दया की ओर सङ्घ का मुख मोड़ा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वभाव

(५८)

मीरा माँ, चैतन्य पिता, स्वपुरोहित ज्ञानेश्वर पाये ।
एकनाथ स्वामी के स्वामी अपने स्वामी बन आये ॥
परम समान गुमानसिंह गुरु मातुल नरसी भक्त सुजान ।
मित्र कबीर बन्धुवर प्रियतम चतुरसिंह राजर्षि महान ॥

(५६)

स्वेश्वर गोरखनाथ जीव के सकल अनर्थ सदा हरते ।
तुकाराम स्वात्मा समर्थ स्वानन्द सुधा सिंचन करते ॥
ज्ञान-धुरन्धर उमा-स्वामि ने तत्त्व-अर्थ साकार किया ।
रसमय तुलसी भक्त सूर ने सत्य प्रेम व्यवहार दिया ॥

सर्व-भाव

(६०)

सर्वाम्बा श्री, सर्व पिता ॐ सर्व पुरोहित षण्मुखराज ।
सबके स्वामी मारुति भैरव सब गुरु गरुड़ भक्त सिरताज ॥
सबके मामा धन्वन्तरि हरि सर्व मित्र श्री धर्म नरेश ।
सर्व बन्धु श्री रामकृष्ण प्रभु परमहंस सर्वेश्वर शेष ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६१)

सर्वात्मा ध्रुव सर्वानन्दी नन्द–राय आनन्दघना।
सर्व-ज्ञान–सम्पन्न अश्वपति हेमचन्द्र का देह बना॥
सर्व सत्य श्री हरिश्चन्द्र–रघु सर्व प्रेम दशरथ–वसुदेव।
सर्वभावमय सर्व स्मरण से मिटा समस्त दुःख स्वयमेव॥

समग्र तत्व

(६२)

पुण्य तत्वमय शुभ भावों में अर्हत् का उपकार महान।
जीव तत्वमय निज स्वभाव में सिद्धों का आधार महान॥
आचार्यों का सदाचार श्री उपाध्याय सुविचार महान।
सर्व साधु संस्कार सनातन शुद्ध दृष्टि व्यवहार महान॥

(६३)

आस्रवमय इस जगद्भाव में चरित्र लोकाचार महान।
ज्ञानदृष्टि का शिष्टाचार तपस्वी का सहकार महान॥
शिष्टाचार निभा करके भी भ्रष्टाचार समूल हरें।
दुष्ट कनिष्ठाचार छोड़ कर स्पष्टाचार कबूल करें॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६४)

श्रेष्ठ और परमेष्टाचार कभी न कहीं प्रतिकूल रहा।
निर्बल दुर्बल सबल सभी को प्रबल भाव अनुकूल रहा॥
आर्तध्यान हैवान भान तज धर्म-ध्यान इन्सान बनें।
रौद्रध्यान शैतान भान तज शुक्लध्यान भगवान बनें॥

(६५)

जग में चलने फिरने वाली दो संस्कृतियाँ विभु लाए।
ऐसा चक्र घुमाया जिसका भेद नहीं कोई पाए॥
भव्य दिव्य ब्राह्मण संन्यासी ज्ञान ध्यान के मूल बने।
शुद्ध प्रवर्तन अशुभ निवर्तन कर्म धर्म अनुकूल बने॥

(६६)

काम क्रोध मद लोभ मोह का त्याग निरन्तर सुखदाई।
शम दम तप वैराग्य प्रेममय मुनियों ने महिमा पाई॥
धर्म मोक्ष पुरुषार्थ सिद्धि सन्तों का ध्येय प्रधान रहा।
अर्थ काम को गौण बनाया शान्त रूप का भान रहा॥

(६७)

पुरुष-लक्ष्य-संसिद्धि-विधात्री सहधर्मिणि साधिका बनी।
महिला-साध्य-काम-सञ्चारिणि पुरुष-अर्थ-प्रेरणा घनी॥
सृष्टि वृद्धि की इस संस्कृति से सुख सुविधाएँ हम पाए।
ऋषि तापस योगी महन्त ने, जग को वैभव पहुँचाए॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६८)

इनसे ही हम सबका जीवन नित्य प्रवृत्ति-प्रधान रहा ।
सांख्य योग दो निष्ठाओं का सत्-फल एक समान रहा ॥
कर्मयोग उद्योग रूप है इसका स्थान विशिष्ट बना ।
क्योंकि लोक-संग्रह में तो शुभ-योग-बीज भी इष्ट बना ॥

(६९)

योग-बीज 'क्रीं' मूल-बीज 'ॐ' परम-बीज 'अर्हं' माना ।
'ह्लीं' रक्षण, 'ट्रीं' तेज, रमा 'श्रीं', गुरु 'ऐं', 'क्लीं' सुकाम जाना ॥
शान्ति बीज 'स्त्रीं', शक्ति बीज 'ह्रीं' चलित करे सब भावों को ।
रुचि सी विधि, विधि सी रुचि ही सम्पन्न बनाती दावों को ॥

(७०)

द्वादश पद द्वादश-भावों में वैमानिक सुख प्राप्त हुए ।
द्वादश राशिग चक्रवर्ति सब ज्योति-लिङ्ग में व्याप्त हुए ॥
नव-ग्रैवेयक नव भावों की ब्रह्मचर्य नववाड़ कही ।
नव लोकान्तिक पुण्य वेदना जग के दुख को ताड़ रही ॥

(७१)

वासुदेव प्रतिवासुदेव बलभद्र पुण्य नव निधि धारी ।
नवग्रह के नव रत्नों द्वारा सब दरिद्रता परिहारी ॥
पंच विषय-हर पंच अनुत्तर अहम्-इन्द्र उत्कृष्ट रहे ।
ध्रौव्य दिशा की ओर दशायें शुद्ध प्रभाव विभाव बहे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७२)

इस विधि से जब चार प्रकार अभावों के भी भाव कहे।
क्यों न बद्रिका पुरी द्वारिका रामेश्वर विश्वास रहे ?
रुद्र अभाव, विभाव विधाता, विष्णु स्वभाव ध्रौव्य जाना।
परम प्रेममय शुद्ध भाव को तत्व रूप में पहचाना ॥

(७३)

अखिल विश्व के अनुभवियों ने केवल-प्रेम-गीत गाया।
मनुज देह उद्यान विराजित आत्मदेव की चिन्माया ॥
नवपद तीन तत्व मिल करके द्वादश वृक्षों की छाया।
इस छाया में सकल शान्ति सुख निःसंशय सबने पाया ॥

ध्यान-वृक्ष

(७४)

देह क्षेत्र बीजाक्षर उपजे, जल-सिंचन प्रभु-शरण बने।
द्वादशांग ज्ञानांकुर प्रकटे स्कन्ध भावना ऽ चरण बने ॥
तप शाखा सत्क्रिया प्रशाखा, शुभ-भव पल्लव हरे भरे।
पुस्स-तत्व-उपदेश-सुगन्धित, ग्रह प्रकाशमय ज्योति धरे ॥
पुष्प

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७५)

निर्मल वातावरण सफल हो रस माधुर्य प्रसार करे ।
मंगल दर्शन तृप्ति व्यक्त हो सब अव्यय उद्गार भरे ॥
अनुस्यूत सर्वत्र सर्वदा तत्व अखंड सर्व निज धाम ।
अद्वितीय उस एक तत्व के सर्वभाव में न्यारे नाम ॥

(७६)

निर्मल अर्हन्तों की करुणा दर्पण–सी शुद्धा जानी ।
शुद्ध शांत रस सदा शक्ति लोकोत्तर ऊर्ध्व दिशा मानी ॥
परम वीर रस आचार्यों की माला मंगल चिह्न बनी ।
उपाध्याय की लक्ष्मी लीला आगम में भय रसिक घनी ॥

(७७)

सर्व साधु का शङ्ख सुना जब पञ्च विषय वीभत्स लगे ।
दर्शनमय सद्ग्रंथ सुमंगल जीव मात्र हो गये सगे ॥
यों अद्भुत रस उदित हुआ जब ज्ञान कुम्भ आवरण खुला ।
धर्मचक्र चारित्र्य चला तब सब विकार–आकार धुला ॥

(७८)

विश्व हास्य रस बना ज्ञान में सदाचार शृंगार हुआ ।
सगुण और साकार सर्वथा आत्म–प्रदेशाऽधार हुआ ॥
सम्यक् तप का दीप दान कर धर्म–ज्योति जब सुलगाई ।
स्वयं पराभव अनुभव पाकर प्रिय–प्रभावना प्रकटाई ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७९)

शिव ताण्डव रस रौद्र रूप धर क्षुद्रभाव को भड़काया।
सर्वेश्वर का सर्व--भाव सर्वस्वभाव सबमें छाया॥
द्वादशांग रवि से प्रेरित हो मैं भी कुछ उद्योग करूँ।
योगयुक्त होकर के ही कुछ यश कर्मों का भोग करूँ॥

(८०)

फिर भारत में सब धर्मों का नित्य सत्य सहयोग करूँ।
अखिल विश्व में व्यापक मिथ्या अहङ्कार का रोग हरूँ॥
रेचन से मल का मोचन कर स्वस्थ मनोरथ में विचरूँ।
कण्टक से कंटक निकाल कर सत्व अहं को भी विसरूं॥

(८१)

सर्वेश्वर प्रभु के अभेद का खेद त्याग कर ध्यान करूँ।
सत्य सुरक्षित प्रेम पन्थ में नित्य नया प्रस्थान करूँ॥
प्रज्ञानन्द सदा आवश्यक कीर्तन वन्दन पूजन में॥
सर्वोत्तम निमित्त प्रतिपादित आत्म-स्वभाव-स्पन्दन में॥

(८२)

आधि व्याधि सब उपाधि छूटी सहज समाधि हुई मम की।
मति मन की साष्टांग साधना संगति सुरति नियम यम की॥
सिद्ध-स्वस्तिकासन पहचाने प्राणायाम सरल आया।
प्रत्याहार ध्यान धारण से कर्मों पर शासन पाया॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अङ्क–ज्योतिष

(८३)

चौदह स्वर आवरण प्रकृतियाँ तैंतिस व्यंजन मल विक्षेप ।
घाति कर्म उत्तर प्रकार का क्रमशः योग करें संक्षेप ॥
प्रथमाऽवग्रह असद्‌वेदना द्वितीय ॐ सद्वेद्य कहा ।
विसर्ग तिर्यक् ऊर्ध्व अधः चन्द्रमा विन्दु मनुजायु रहा ॥

(८४)

अर्ध चन्द्र लघु उच्चारण का चिह्न शुभाशुभ नाम भना ।
नवम दशम जिह्वामूलीय उपध्मानीय द्विगोत्र बना ॥
यों सत्तावन विकृति प्रकृतियाँ कर्म शास्त्र आधार रहीं ।
हस्ताक्षर उपलब्ध अङ्क के लिए भक्ति–रीतियाँ कहीं ॥

(८५)

व्यक्ति नाम निज कौटुम्बिक उपनाम गोत्र को लिखा लिया ।
पृथक्–पृथक् स्वर व्यंजन चिह्नों के क्रमाङ्क को मिला लिया ॥
फल को फिर संक्षिप्त किया नव अङ्कों में जो अङ्क खुला ।
नवपद के उस इष्ट ध्यान सें अनादि का मद मोह धुला ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(८६)

प्रथम नवम पञ्चम की मैत्री मोक्ष शान्ति दृढ़ भक्तिमयी ।
द्वितीय अष्टम सख्य वृत्तियाँ धर्म ~~शान्ति~~ इन्द्रिय विजयी ॥
तृतीय सप्तम काम महत्ता चतुर्थ षष्ठम अर्थ कला ।
प्रथम तृतीय द्वितीय चतुर्थी षष्ठम अष्टम दुष्ट फला ॥

(८७)

सप्तम नवम विरोधी प्रकृति पञ्चमी सबकी सुखदात्री ।
उपर्युक्त अङ्कों की मैत्री व्यवहारिक मङ्गल पात्री ॥
मास समय तिथि वार वर्ष में इष्ट प्रश्न का अङ्क मिला ।
अपने-अपने लब्ध अङ्क से सबका उत्तर भाग्य खिला ॥

(८८)

उठते समय सर्व हितकांक्षा उत्तम फल का मूल कहा ।
सोते समय मुमुक्षु वृत्ति में मनुज जन्म का सुरस बहा ॥
क्रमशः नवपद ध्यानोद्यम से सबका भाग्य बदल देना ।
प्रातः सायं मन्त्र-जाप से मन का वांछित फल लेना ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्यान–पद्धति

(८९)

हृदय मध्य अरिहन्त विराजित चन्द्रप्रभ का धवल स्वरूप ।
ब्रह्मरन्ध्र निज रूप प्रकाशित पद्मप्रभ आदित्य अनूप ॥
ऋषभादिक सोलह जिनेन्द्र भज आचार्यों का ध्यान करें ।
द्विभुज कुहनि मणिबन्ध दशांगुलि स्वर्ण वर्ण पहचान करें ॥

(९०)

नाभिरन्ध्र में पार्श्वनाथ भज हरित रूप का वरण करें ।
सागरवर गंभीर भाव से उपाध्याय का स्मरण करें ॥
नयनों में प्रभु नेमिनाथ यदुनन्दन सर्व साधु मानें ।
आसन में प्रभु सुविधिनाथ से दर्शन पद को पहचानें ॥

(९१)

केशरियान्वित शुक्ल रूप में, यह षष्ठम पद 'ध्यान करें ।
श्रोत्रेन्द्रिय में मल्लिनाथ भज निर्मल सम्यग्ज्ञान करें ॥
जामुनियान्वित हरित वर्ण में सप्तम पद का स्मरण करें ।
मुनि सुव्रत चारित्र्य सुगन्धित घ्राणेन्द्रिय में ग्रहण करें ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६२)

यों अष्टम पद भजें श्याम सुन्दर आसमानी झाँईं में।
नवम सुपद सिन्दूर-वर्ण-मय कसुम्भली परछांईं में॥
वासुपूज्य भज सम्यक् तप पद रसनेन्द्रिय में रस लायें।
ग्रीवा देव, भाल गुरु भज कर भ्रूमध्यस्थ धर्म पायें॥

स्मरण की विस्तृत विधि

(६३)

भरत देश पर शुभ्र शिरोमणि निश्चल निर्मल हिमगिरिराज।
चन्द्रमौलि शङ्कर सिर शोभित चन्द्रप्रभ जिनवर सिरताज॥
चित्त शुद्धि हित परम राजराजेश्वर प्रभु का उज्ज्वल ध्यान।
रहे सदा सर्वत्र सर्वदा करे सर्व का सब कल्याण॥

(६४)

परम प्रभा से हुआ प्रभावित कोटि कोटि रवि का उद्योत।
लाल पद्ममय लाल सरोवर पद्मप्रभ सुविराजित ज्योत॥
ब्रह्मरन्ध्र लोकाग्र स्थान पर चमक रहे अनन्त सिद्धेश।
अपने चहुँ दिशि जगमग करते असंख्य सुर रजनीश दिनेश॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६५)

सोलह तीर्थङ्कर–प्रभु दोनों कर कमलों का स्थान वरें।
निम्न उपांगों में संवर–स्वामी आचार्य सदा विचरें॥
दक्षिण कर मणिबन्ध ऋषभ–सह व्यासदेव का न्यास करें।
बैल समान प्रमाद छुड़ा कर, सब पापों का ह्रास करें॥

(६६)

शुद्ध धर्म का भान न भूलें बन्धन में न कभी जकड़ें।
ब्राह्मी सुन्दरि मुक्ति भक्तिमयि ध्वनि सुन सिद्धि पन्थ पकड़ें॥
अजितनाथ अंगुष्ठ–बिराजित ईर्या समिति–विधान करें।
मदोन्मत्त गज पर अंकुश–हित जैमिनि श्रुति का दान करें॥

(६७)

तर्जनि में सम्भव जिन शोभित भाषा समिति विवेक रहे।
अश्व बुद्धि पर अनुशासन हित गौतम न्यायी नेक रहे॥
मध्यांगुलि में अभिनन्दन भज युक्ताहार युक्ति पायें।
मर्कट-पन तज उञ्छवृत्ति से मुनि कणाद सम कण खायें॥

(६८)

अनामिका अंगुलि में जिनवर सुमतिनाथ से सुमति मिले।
विषयों में न उड़ें पंछी सम सु–मनों का उद्यान खिले॥
पुरुष प्रकृति की भेद–ज्ञप्ति, निक्षेपण–समिति हृदय आये।
कपिलदेव का सांख्य कृतांत त्रिगुणमय भाव अन्त लाये॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(९९)

लघु-अंगुलि में पातञ्जल से युक्त, वृत्तियाँ रुक जायें।
स्वस्तिक गत्यंतक सुपार्श्व जिन प्रतिष्ठापना सिखलायें॥
वाम भुजा में शीतल जिनवर परशुराम के संग भजें।
कल्पवृक्ष श्री वत्स चिह्न, मन-गुप्ति-विरोधी भाव तजें॥

(१००)

कुहनी में श्रेयांस ध्यान कर वचन गुप्ति का भान करें।
गेंडा सम दुर्वचन छोड़ वामन सम व्यापक ज्ञान वरें॥
विमलनाथ मणिबन्ध विराजित कायगुप्ति को सिखलायें।
वेदोद्धारक प्रभु वराह सब मलिन वृत्तियाँ मिटवायें॥

(१०१)

अंगुष्ठे अनन्त दत्तात्रय अत्रि-ज्ञान-आचार धरें।
श्येन विहग सम ऊँचे उड़कर कभी न विषय विधान वरें॥
धर्मनाथ मनु की स्मृतियों से दर्शन-रस हम पान करें।
वज्र विभाव तोड़ तर्जनि में मृदुल तत्त्व संधान करें॥

(१०२)

मध्यम अंगुलि कुन्थुनाथ भज अज सम मैं-मम दूर करें।
कल्किदेव सम म्लेच्छ-भाव हर दुश्चरित्र चकचूर करें॥
अनामिका में अर-सनकादिक भज कर तप में लीन रहें।
नन्द्यावर्त मीन चिह्नित मन अचल विमल स्वाधीन रहें॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१०३)

कनिष्ठिका में नमि-नारद मुनि नम्र वीर्य का दान करें।
नील कमल मानस उज्ज्वल निर्लिप्त वृत्ति संधान करें॥
शांतिनाथ दक्षिण कुहनी में प्रबल मोह मिथ्यात्व हरें।
अजात दृष्टा गुरु वशिष्ठ जग-मृग-मरीचिका दूर करें॥

(१०४)

महावीर दक्षिण भुज शोभित त्रिषय कषाय घटायें हम।
मृग वध कर मृगराज कहायें ऐसी वृत्ति हटायें हम॥
प्रभु नृसिंह से प्रबल पराक्रम पाकर शौर्य दिखायें हम।
सदाचार-मय तृतीय पद भज दिव्य प्रभा प्रकटायें हम॥

(१०५)

चरण तले तमतमा छोड़ बलराम अनन्त शेष जागे।
उर में शांत चतुर्भुज सिर पर पारसनाथ ध्यान लागे॥
नाभिरन्ध्र मणिपूर चक्र को उपाध्याय संबुद्ध करें।
मनोयोग अर्हत्, चतुर्थ पद वचन-योग परिशुद्ध करें॥

(१०६)

काय योग साधन हित साधक नेमनाथ का ध्यान करें।
कृष्ण श्यामसुन्दर नयनों में वसें कर्म-आसक्ति हरें॥
सम्यक्-दर्शन शङ्खध्वनि पर अरिष्टनेमि अलंकृत हों।
मुद्रा बन्ध स्वरोदय-जप से रोम-रोम सब झंकृत हों॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१०७)

आसन में लोकोत्तर-धाता सुविधिनाथ सुविधान करें ।
मकर सरीखी गलन-कुविधि तज पुष्पदन्त का ध्यान करें ॥
यों मूलाधिष्ठान चक्र में दर्शन पद सम्मान करें ।
कमलोसन पुष्कर सुविराजित ब्रह्म वेद का गान करें ।

(१०८)

लक्ष्मी माँ के सिर पर शोभित ज्ञान सुधा का कुम्भ भरा ।
उस पर मल्लिनाथ सुविराजित रोमरोम में रूप हरा ॥
सर्व पाप का हुआ प्रणाशन श्रोत्रेन्द्रिय में स्फूर्ति बढ़ी ।
षट् गणधर मल्लीन हुए मङ्गलमयि मूर्ति सु-चित्त चढ़ी ॥

(१०९)

मंगल में मंगल सुविराजित मुनिसुव्रत प्रभु पहिचानें ।
घ्राणेन्द्रिय में सु-व्रत सुगन्धित शुद्ध सुमन हमने जाने ॥
अङ्ग-अंग में संयम-साधक कूर्म मन्दराधार बने ।
सकल द्वन्द्व हर रामचन्द्र प्रभु शुद्ध सच्चिदानन्द घने ॥

(११०)

'प्रथमं भवति मंगलम्' तपपद पण्डित मरण समाधि वरें ।
खण्डक मूषिक के अखण्ड अनुशासक गणपति विघ्न हरें ॥
महिष-भाव-मर्दक यम को प्रभु-वासुपूज्य वर्चस्व झिले ।
रसनेन्द्रिय में दिव्य ध्यान रस मधुर सुफल सर्वस्व मिले ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१११)

ज्ञान और दर्शन शिव सुख से, जीवन ध्रुव संपन्न हुआ।
निज अपूर्व सौन्दर्य मिला जब नाम रूप अवसन्न हुआ॥
सर्व स्वभाव समान तत्व-संस्पर्शन वीर्य अनन्त मिला।
दान लाभ भोगोपभोग बल, अन्तराय का अंत मिला॥

शास्त्र स्थापना

(११२)

कौशल्या की कुशल शक्ति ने रम्य राम उत्पन्न किया।
भाव शक्ति सौमित्र लक्ष-मन शत्रु-हनन का ध्येय दिया॥
क्रिया शक्ति के नन्द भरत ने सर्व भरण का भार लिया।
सीता की वैदेहि शक्ति ने सु-नयन का पीयूष पिया॥

(११३)

दश इन्द्रिय रथ के वशिष्ठ से अ-वध अहिंसापुरी बनी।
दशमुख इन्द्रिय भोग किया लङ्का में हुई अशान्ति घनी॥
किष्किंधा में चित्त-बालि हर अङ्गदादि सब शुद्ध किए।
श्रृङ्गवेरपुर में निषाद गुह केवट को निज चरण दिए॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११४)

योगेश्वर ने पञ्चशक्तियों का भारत में मेल किया ।
दुर्योधन दुःशासनादि धृतराष्ट्र मोह से खेल किया ॥
शाश्वत राजनीति का शिक्षण कृष्णचन्द्र का कृत्य बना ।
विश्वज्ञान–विज्ञान भगवती गीता का सद्भृत्य बना ॥

(११५)

सर्व प्रेममयि प्रभु लीला में भागवती प्रतिभा चमकी ।
दत्तात्रय–अवधूत देव की दिल में दिव्य दया दमकी ॥
ऋषभनाथ के नव पुत्रों से परमहंस–संहिता मिली ।
वीतराग निर्ग्रन्थ ज्ञान से इस जीवन की दृष्टि खिली ॥

(११६)

प्रत्यक् धर्म, पराक् सद्गुरु, प्राक् देव दया उद्गार बने ।
स्वधा और फट्फट् स्वाहा हुम् बीजाक्षर व्यवहार घने ॥
दृष्टिवाद–मय सूत्र–कृतांग अनुत्तर–अंग प्रसाद हुआ ।
सब दर्शन का किया समन्वय जीवन में आह्लाद हुआ ॥

(११७)

प्रश्न-व्याकरण पुण्य तत्व मय अर्हन्तों का प्रिय उपदेश ।
कर्म–अन्तकृत्–दशा जीव का लोकोत्तम सिद्धान्त स्वदेश ॥
पञ्चमांग भगवती–सूत्र आचार्यों का संवर संदेश ।
उपाध्याय–समवाय–अंग में शुद्ध निर्जरा का निर्देश ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११८)

श्री स्थानांग सुदर्शन वाचक प्रतिपादक निर्जीव विदेश ।
ज्ञाताधर्म–कथांग ज्ञान सब पापों को कहता दुर्देश ॥
अंग–उपासक चरित प्रकाशक आस्रव का न करे आदेश ।
सुख-विपाक सब दुःख विनाशक मिटा बंध का सकल कुदेश ॥

(११६)

सर्व साधु संस्कार प्रकाशक आचारांग परम उद्देश ।
श्रुति स्मृति आगम–निगम–संहिता वेदों में विज्ञान प्रदेश ॥
सदुपनिषद्–वेदांत-विधाता ऋषि मुनियों का अविचल ध्यान ।
त्रिपिटक ज़िन्द–अवस्ता में भी किया धर्म का अनुसन्धान ॥

(१२०)

यों नवीन प्राचीन बाइबिल शांति मार्ग इञ्जील क़ुरान ।
जीवन–स्पर्शी तत्त्व–प्ररूपक निर्ग्रन्थों के ग्रन्थ महान ॥
सबका सार यही समझा हम अहङ्कार–तम हरण करें ।
काम क्रोध मद लोभ हटा कर नमस्कार का वरण करें ॥

(१२१)

यंत्र तंत्र लय मंत्र योग से मति–दर्पण को शुद्ध करें ।
पुरुषोत्तम रवि के प्रताप से ज्ञान अग्नि को क्रुद्ध करें ॥
चउ छह दह बारह सोलह दो सहस्र दल संबुद्ध करें ।
मध्य सुषुम्ना पंथ पार कर चित्त–समाहित युद्ध करें ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१२२)

चित्त समाहित युद्ध क्रिया ही मनुज–जन्म साफल्य महान ।
धर्म–क्षेत्र कुरु–क्षेत्र आर्य पुरुषार्थ प्रयोजन कुशल विधान ॥
साधन साध्य समाप्ति सिद्धिमयि प्रेमभक्ति आदर्श प्रधान ।
व्यापक व्याप्य विभाव विवर्जित व्याप्ति तत्त्व का अनुसंधान ॥

(१२३)

आत्म कृपा की निर्भरता से विश्वम्भर विश्वास रहे ।
सर्व भाव सिद्धान्त तत्त्व से योगक्षेम विकास रहें ।
कुण्डलिनी जागृत होने पर दिव्य चरित्र विलास रहे ।
धर्म कथांग अलंकृत प्रभु के अनुगम में उल्लास रहे ॥

(१२४)

हंस शुक्ल, शुक हरित बनें क्यों चित्र विचित्र मयूर हुए ।
नियति स्वभाव काल कर्मादिक सब उद्यम भरपूर हुए ॥
बीज शक्ति विनियोग देवता कीलकादि सब दूर हुए ।
ॐ श्री–युक्त राजराजेश्वर, सकल विघ्न चकचूर हुए ॥

(१२५)

यों निर्द्वन्द्व स्वतन्त्र बुद्धि से, सत्यप्रेम सन्निकट किया ।
सम्यक्दर्शनमयि प्रतीति से सम्यक्–ज्ञान प्रकाश दिया ॥
यथाशक्ति सम्यक्–चरित्र–मय 'सूर्यचन्द्र' निर्भय विचरा ।
सम्यक्–तप स्वीकृत कर, सर्व–स्वभावोद्धार समक्ष धरा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गुरु-तीर्थ-प्रशस्ति-परंपरा-पद

(१)

इला, वारिजा, ज्योति, अज-रवा, आशम्बरी शांति-साता ।
रमा ऽ राधिका-सीता, ब्राह्मी, उमा साधिका ऽ द्या माता ॥
ऋषभदेव, श्रीनाथ, चतुर्भुज, पंचानन हनुमत् दिक्काय ।
राघव 'रूप'-ब्रह्म पुष्कर प्रभु एकलिंग पीताम्बरराय ॥

(२)

लक्ष्मण-विजय-श्याम, गिरिधारी, अम्बरीष, वृन्दावनचंद ।
मंगल, नाद, कुण्ड, अभयांजन, अमर, जंबु, हरिहर सुखकंद ॥
वृद्ध, कपिल, राजेश, खोल, जल, सोम, सहस्रेश्वर स्वामी ।
क्षीर, कमल, भुवनेश्वर महिया, गोगा, हर-पाबू नामी ॥

(३)

जगन्मात्, हरसिद्धि जावरी, अम्बा-माँ; काली गौरा ।
राष्ट्र-सैनिका, धूणी, करणी, गया, अजंटा एलौरा ॥
आबु, शिखर, गिरिनार, तलाजा, पाँवा, चंपा, हिम-गिरि-माथ ।
मक्षि गौड़ि अहिछत्र करेड़ा-शंखेश्वर-जिराउला-नाथ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

गंगा, जमुना, नील, मिसिसिपी, सिंधु, नर्मदा, सरस्वती ।
द्राक्षाराम दक्ष भीमेश्वर ध्रुव-बलिदानी शक्ति सती ॥
वकुलारण्य-विभांडक ऋषिवर करुणाकर श्री लक्ष्मण-राम ।
मधु-कैटभ-नाशक तीर्थेश्वर तिरुवल्लूर शेष-विश्राम ॥

(५)

वाराणसी प्रयाग देवगिरि मूल-बद्रिका गढ़-चित्तौड़ ।
सिद्धकूट कुन्थलगिरि कनखल बावन-गज प्रतिमा-सिरमौड़ ॥
पद्मप्रभ-लक्ष्मणी कोरटा, मांडव, भांडव श्री कुलपाक ।
गढ़ मुक्तेश्वर, परशुराम, गिरि जरगा, साम्ब सूर्य कोणार्क ॥

(६)

वेंकटेश, कांची, अवन्तिका, अरुणाचल साक्षी-गोपाल ।
कुम्भकोण, पद्माचल, माँगी-तुङ्गी, गजपन्था शिव-चाल ॥
वीर-दियाणा, सुविधि सियाणा, अन्तरिक्ष, वइ, वरकाणा ।
पालीताणा नदिया-नाणा, मुनिसुव्रत जिनवर ठाणा ॥

(७)

सुखानंद, घारेश्वर-शङ्कर, हालेविड़ अहविल श्रीरंग ।
पक्षितीर्थ, दक्षिणामूर्ति-गुरु, वेद-हस्तिगिरि अद्भुत ढंग ॥
इन्द्र चन्द्रगिरि भद्रबाहु गुरु, भद्राचल गिरि निश्चल ध्यान ।
यादव गिरि को मिला दत्त गुरु रामानुज से बहु सम्मान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(८)

दक्षिण काशी गरलपुरी गुड्-नंजन नीलकंठ स्वामी ।
महिषासुर मर्दिनि चामुण्डा महीशूर-पुर सुख-धामी ॥
श्री वसुदेव-देवकी-सेवित गुरु-वायूर अलौकिक धाम ।
धौम्य-प्रतिष्ठित माधव-विग्रह कश्यप-अदिति-पूज्य अभिराम ॥

(९)

अक्षयवट, अघमर्षण, काम्यक, कपिल-वस्तु मोहनखेड़ा ।
ज्वालामुखी, भद्रकाली माँ, शक्ति रेणुका श्री बेड़ा ॥
श्री तारंगा, त्र्यंबक तारण-तरण अमृतसर, बरसाना ।
नेवासा, सिरडी, लक्ष्मणपुर राम-झरोखा मन-माना ॥

(१०)

बृहदीश्वर तंजोर राजराजेश्वर चोल-सुपूजित देव ।
व्यास-पिता-ऋषि-राज-पराशर सफला शक्ति भक्ति स्वयमेव ॥
पंढरपुर, भगवान-बारसी, पैठण, देहू, आलन्दी ।
चन्द्रप्रभ की चन्द्रपुरी, प्रभु पुष्पदन्त की काकन्दी ॥

(११)

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र अयोध्या हरिद्वार मथुरा ऋषिकेश ।
सहज, सिद्ध, राउल, बाउल, जय-गुरु-पथ-नाथ राजराजेश ॥
गुरुद्वारा मस्जिद अग्यारी मन्दिर चर्च चैत्य सुविहार ।
सूत्र पिटक इंजील अवस्ता श्रुति-स्मृति आगम ग्रन्थ अपार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१२)

इस पुरुषोत्तम परम्परा का सर्व गुह्यतम तत्वज्ञान ।
प्रियदर्शी श्रेणिक विक्रम शक अजयपाल संप्रति गुण खान ॥
शिव प्रताप अरविन्द रमण में प्रकट हुआ समयोचित अंश ।
चला देश में शांत सुधारक कवि रवीन्द्र गाँधी का वंश ॥

(१३)

लोकमान्य शिक्षक नेताजी रक्षक कृषि-गोपाल बजाज ।
पांडुरंग-सानेगुरु सेवक भीमराव कृत नव विधिराज ॥
केशव माधव राष्ट्र विधायक स्वामी श्रद्धानन्दाचार्य ।
'राय' 'सेन' ऋषि दयानंद प्रिय वैदिक धर्म प्रचारक आर्य ॥

(१४)

प्रेम, राम के अन्तेवासी भद्रङ्कर गणिवर पंन्यास ।
देव दमीश्वर—दत्त मन्त्र में जिनने दिया अटल विश्वास ॥
नमस्कार जप के प्रताप से गुणस्थान क्रम वृद्ध हुआ ।
जिन–प्रज्ञप्त तत्व केवल-गम षट् द्रव्यात्म समृद्ध हुआ ॥

(१५)

सकल द्रव्य हम मोती-दाने तत्त्व सुमोदक मोतीचूर ।
बेसन घृत ब्रह्मांड विश्व जग ब्रह्म-शर्करा से भरपूर ॥
सुर नर ऋषि मुनि नाम प्रेमरस मधुर भोग प्रिय लगा रहे ।
मंगलमूर्ति प्रसाद प्राप्त कर यह प्रवचन उद्गार कहे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१६)

यह प्रवचन उद्गार हमारे सत्य-प्रेम दर्शन का सार ।
इस पर चलते-फिरते-रहते अखिल विश्व के सद्व्यवहार ॥
सदाचार-सुविचार-पूर्ण सब शिष्टाचार स्वधर्माधार ।
निर्विकार-संस्कार-परायण शास्त्रों के सन्देश अपार ॥

(१७)

इन सन्देशों की प्रसिद्धि में सिद्ध, बुद्ध, गुरु का ध्रुव धर्म ।
पंच वेद, वेदान्त पंच, सिद्धान्त पंच दर्शन का मर्म ॥
द्वैताद्वैत, योग का दर्शन, सर्व साधु का लक्ष्य स्थान ।
सांख्य, केवलाद्वैत, दिगम्बर, निश्चय सम्यग्ज्ञान प्रधान ॥

(१८)

भक्ति विशिष्टाद्वैत, भिक्षुपथ, न्याय-दृष्टि ऐश्वर्य महान ।
शुद्धाद्वैत, तपस्वी-तारण, वैशेषिक आदर्श विधान ॥
श्वेताम्बर, मीमांसा, द्वैती शुद्ध क्रिया की प्रिय पहचान ।
दर्शन पंचक के सुमञ्च पर विलसित विश्व ज्ञान विज्ञान ॥

(१९)

रामतीर्थ, आनन्दमयी माँ कृष्णमूर्ति, किशोरीलाल ।
दादा, बाबा, काका, मामा, संतबाल का ज्ञान विशाल ॥
शरच्चंद्र, जगदीशचन्द्र, सुख, टालस्टॉय, खलिल जिब्रान ।
बङ्किमचन्द्र निखाइल, ख्वाजा, रस्किन मानवेन्द्र मतिमान ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२०)

मिल, बेंथाम, गोखले, नीत्से, गोर्की, फ्रांसिस खां गफ्फ़ार ।
वा. मो. शाह क्रांति सुविचारक भामाशाह दिव्य दातार ॥
आगाखाँ हिटलर मुसोलिनी डिबेलिरा लिङ्कन टण्डन ।
विल्सन विट्ठल वल्लभ ऊधम–भगतसिंह भारत मण्डन ॥

(२१)

महादेव ख्रुश्चेव कैनिड़ी मृत्युञ्जय सावरकर वीर ।
दण्डी भारवि कालिदास कवि माघ गुप्त गेटे गंभीर ॥
उपासनी के बाबा मेहर साहबजी राधा–स्वामी ।
डॉक्टर–दीनशाह–म्हेताजी दादा–नौरोजी नामी ॥

(२२)

पन्ना पद्मिनि मातृ–शारदा लक्ष्मी झाँसी की रानी ।
पूर्वगामिनी धन्य सती माँ हाड़ी, किरणा–कल्याणी ॥
गुरु गोविन्द–हक़ीक़त–वन्दा–शिवाऽदि–मातृ-शक्ति मानी ।
कस्तूरी इन्दिरा सरोजिनि, कमला विजया मर्दानी ॥

(२३)

धन्य विवेकानन्द मनस्वी मालवीय एनी बीसेन्ट ।
श्री न्यूटन वर्नार्डशाह प्रिय आइंस्टीन मार्कनी केण्ट ॥
नाम स्थापना द्रव्य भाव में काल क्षेत्र सापेक्ष कहा ।
दान शील तप के स्वभाव में लाखनजी का लक्ष्य रहा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री लाखनजी के कुटुम्ब का इतिहास

(१)

विक्रम संवत् द्विशत द्विविंशत् डाँग्यावास मेड़ता स्थान ।
बने महाजन श्री लाखनजी परम गोत्र परमार महान ॥
वाशिष्ठाग्नि कुलोद्भव क्षत्रिय धन्य हुआ मनु सूरज वंश ।
उज्ज्वल व्युज्ज्वल श्री कज्जलजी त्रिगुण रूप थे जिनके अंश ॥

(२)

ऊदा जोधा माणा गणपत सङ्घ सजाए यात्रा हेतु ।
कर स्वधर्मवात्सल्य बनाये सिद्धायतन सिद्धि के सेतु ॥
नरपत-श्रेष्ठ शाह पद पाए बने मङ्त्री गङ्गाशाह ।
झाला तिलक संग संगर में पहुँचे धारा तीर्थ सुराह ॥

(३)

श्री गोविन्द नृसिंह शाह ने उनका ही अनुगमन किया ।
श्री माणिक्य जवाहर हीरा फूलचन्द को जन्म दिया ॥
धन्य हुआ परिवार सुराणा श्री नाथी माँ को जाया ।
शेष चतुर्भुज मधुसूदन से सूरजचन्द पुत्र पाया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

श्री नाथी माँ भूरि सुतारिनि, रौड़-ज फूल पिता सद्भक्त ।
विजय सूरि राजेन्द्र पुरोहित चौथमल्ल मुनि स्वामि विरक्त ॥
पूज्य जवाहर काका-सद्गुरु निर्भय राउल मामा-देव ।
मित्र चतुर रघुवीर बंधु-युग माधव-शांत अनुज स्वयमेव ॥

(५)

जीवेश्वर राजेन्द्र-जवाहर जयदयाल-हनुमानप्रसाद ।
आत्मा पन्त, प्रसाद, निराला, राधाकृष्ण अतुल आह्लाद ॥
आनंदी श्री चंदन वर्णी-कान्ह-सुजान आत्म-योगीन्द्र ।
मातृ-प्रतापी ऋषभ-पिता के कुन्दन वंदित पूज्य यतीन्द्र ॥

(६)

ज्ञान नरोत्तम नारायण युग कांतिकिरण कुलदीपप्रकाश ।
श्री गिरिधारी विजय मनोहर ॐ अनंत-आनंद विकाश ॥
सत्य सुरेश गणेश निताई शिव हरि, हेम धर्म सुखकंद ।
हस्ती वृद्धि कन्हैया अर्जुन प्रेम रतन-धन सूरजचंद ॥

(७)

अखिल लोक की जन्मभूमिका आद्या मातृ 'मादरी' धाम ।
राजस्थान-बड़ी-बैठक से कहते बड़ीसादड़ी नाम ॥
सर्व स्वभावोद्धार-सूत्र यह इसका दृढ़ अपरोक्ष प्रमाण ।
शोभ-नाथ-शिव सांडेश्वर-हर सूरजचंद करें कल्याण ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतिम भाव

मंगल विवेक मन में जागे, दर्शन-संस्कृति-सम्पन्न प्यार।
मिल जायँ वाद सब राष्ट्रों के, फैलें निर्मल मानव-विचार ॥
हों सत्य, दया, ईमान, धैर्य, अति संग्रह का तज दें विकार।
अति भोग रोग का मूल सदा, समझें संयत जीवन उदार ॥१॥

है उन्नति-मय यह जगत् चक्र, सुख-शिव-सुन्दर-सुषमा अपार।
हों युद्ध-रुद्ध सब देशों में, कोई न किसी पर बने भार ॥
बलवान, धीर, मतिमान, बनें, सबका हितकारी हो सुधार।
भाषा मानव की एक रहे, विज्ञान-धर्म का मिले तार ॥२॥

हो न्याय सैन्य बल मिला-जुला, संरक्षित सबके स्वाधिकार।
सब राष्ट्र बनें प्रान्तिक प्रदेश, सर्वत्र नागरिक सम विहार ॥
हो कर्म योग कौशल्य व्याप्त, घर घर खुल जायें मुक्ति द्वार।
उतरे स्वर्गीय सौख्य भू-पर, हो सूर्यचंद्र संसार सार ॥३॥

सत्यभक्त—प्रशस्ति

अन्तस्तल में अमित वेदना, वाणी में अति पुण्य प्रकोप।
जीवन का स्वायत्त निरीक्षण, मंगल तीक्ष्ण क़लम की नोक ॥
विश्व हितैषी सत्य भाव की ओर बुद्धि का अविरत झोक।
नैतिक, सामाजिक सेवा में, बढ़ते रहे सदा बे–रोक ॥
विपत् प्रलोभन और उपेक्षा, पथ बाधक हो सके न रंच,
सत्य-समाज बनाया जिनने, विश्व–धर्म का निर्मल मंच ॥
सुगुण-सुगन्धित ध्रुव प्रभाव मय, प्रामाणिक जीवन सौ टंच।
सत्यभक्त जो बने स्वयं ही, विश्व-न्याय के अद्भुत पंच ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिशिष्ट १

श्रीँ ॐ अर्हं

श्रीँ का अर्थ = व्यक्ति - शक्ति = व्यष्टि

ॐ' का अर्थ = लोक – शक्ति = समष्टि

[अ=अधोलोक+उ=ऊर्ध्व+म्=मध्य=ॐ=सम्पूर्ण लोक]

'अर्हं' का अर्थ = परम-शक्ति (परमेष्ठी)

['अ', से 'ह' तक सभी स्वर—व्यञ्जन यानी द्रव्य—पर्याय आ गये 'अहं', में सब संसार समाविष्ट है उसके ऊपर 'र' कार लगा दिया तो 'अर्हं' हो गया ('र' कार = धिक्कार)

सारांश

'अहं' 'श्रीं' के बल से समष्टि रूप 'ॐ' को समर्पित हो जाय तो परमेष्ठी='अर्हं' हो जाता है।

तत्व तो केवली गम्य ही है फिर भी उसमें क्या है ? और क्या नहीं है ? कितना वक्तव्य है ? और कितना अवक्तव्य है ? कौन जाने ? यहाँ अनुभवी पुरुषों के लिये मनन-चिन्तन की सामग्री उपस्थित की जाती है। अनुप्रेक्षा के द्वारा साक्षात्कार करें :—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समष्टि-साधना का बीज	परमेष्ठी की उपलब्धि
ॐ	अर्हं
ऐं (दर्शन) श्रीं (ज्ञान)	ह्रीं (आचार) क्लीं (विचार)
ह्लीं (संयम) ट्रीं (तप)	क्रीं (पुण्य) स्त्रीं (शान्ति)

दृष्टिवाद में १४ पूर्व का ज्ञान भी है। उनका सारांश समझने के लिये अनुभवी, विद्वान्, बुद्धिमान, जिज्ञासु और साधक भक्त-संतों को निम्न-लिखित तालिका के शब्दों पर अनुप्रेक्षा करना चाहिये। श्रीनदीजी की घोषणा है कि श्री दृष्टिवाद में सर्वभाव-प्ररूपणा की गई है।

"दिट्ठिवाएणं सव्वभाव परूवणा आघविज्जइ"

(१) द्वार १४ :	(२) शुभ १४ :	(३) शुभतर १४ :	(४) शुभतम १४
१ निर्देश	लौकिक	लोकोत्तर	लोकोत्तम
२ स्वामित्व	ब्राह्मण	संन्यासी	श्रमण
३ साधन	प्रवृत्ति-मार्ग	निवृत्ति-मार्ग	साधु-मार्ग
४ अधिकरण	वैदिक-मंत्र	वेदांत-वाक्य	सिद्धांत-प्रवचन
५ स्थिति	निर्माण	निर्वाण (मोक्ष)	सिद्धि
६ विधान	विज्ञान	ज्ञान, दर्शन	सम्यक्ज्ञान

७ सत्

सूर्य	ब्रह्म	तीर्थंकर
योग—दर्शन	द्वैताद्वैत—दर्शन	पुरुषार्थ—दर्शन,
न्याय-सांख्य (निश्चय)	केवलाद्वैत, द्वैत (निश्चय)	नियति, स्वभाव (निश्चय)
मीमांसा-वैशेषिक (व्यवहार)	शुद्धाद्वैत, विशिष्टाद्वैत (व्यवहार)	काल-कर्म (व्यवहार)

८ संख्यान—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९—क्षेत्र—द्वादश राशिगत—		द्वादश—	द्वादशांग—
	ज्योतिः पुंज	ज्योतिर्लिंग	उद्योत
१०—स्पर्शन	प्रयोग	संयोग	अनुयोग
			भोगांतराय-क्षय (भोग)
११—काल	असंख्य	अनन्त	अनन्तानन्त (सर्व)
१२—अन्तर	विश्लेषण	संश्लेषण	संयोजन
	(विवाद)	(संवाद)	(निर्विवाद-प्रवाद)
१३—भाव	विकास	चिद्-विलास	आत्म-प्रकाश
१४—अल्पबहुत्व	यथार्थ	परार्थ	परमार्थ

(५) पूर्व १४ : (६) संबन्ध १४ : (७) अधिगम १४ : (८) ध्यान १४

१	प्रत्याख्यान	जीव	मति	धर्मध्यान—
२	विद्या	आत्मा	श्रुत	पृथकत्त्व-वितर्क—
				सविचार शुक्लध्यान
३	कल्याण	आनंद	अवधि	एकत्व-वितर्क—
				अविचार शुक्लध्यान
४	प्राणापाय	ज्ञान	मनः पर्याय	सूक्ष्म क्रिया
				अप्रतिपाती शुक्लध्यान
५	क्रियाविशाल	सत्य	सर्वज्ञता	व्युपरत क्रिया—
			(व्यवहार)	अनिवृत्ति शुक्लध्यान
६	लोक-विन्दुसार	प्रेम	केवल (निश्चय)	सिद्धत्व

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७	उत्पाद	माता	एवंभूतनय अनुचर सद्भूत निश्चय
८	अग्रायणीय	पिता	समभिरूढ़ उपचर सद्भूत निश्चय
९	वीर्य	पुरोहित	शब्द अनुचर असद्भूत निश्चय
१०	अस्ति-नास्ति	स्वामी	ऋजुसूत्र उपचर असद्भूत निश्चय
११	ज्ञान-प्रवाद	गुरु (काका)	व्यवहार अनुचर सद्भूत व्यवहार
१२	सत्य-प्रवाद	देव (मामा)	संग्रह उपचर सद्भूत व्यवहार
१३	आत्म-प्रवाद	मित्र	देशपरिक्षेपी नैगम अनुचर असद्भूत व्यवहार
१४	कर्म-प्रवाद	बन्धु	सर्व परिक्षेपी नैगम उपचर असद्भूत व्यवहार

(९) मनु १४ : (१०) आवश्यक १४ : (११) लेश्या १४

१	दक्ष सावर्णी	प्रत्याख्यान	कृष्णलेश्या—निवृत्ति
२	ब्रह्म ,,	कायोत्सर्ग	नील लेश्या ,,
३	धर्म ,,	प्रतिक्रमण	कापोत लेश्या ,,
४	रुद्र ,,	वन्दन	पीत ,, ,,
५	देव ,,	चतुर्विंशतिस्तव	पद्म ,, ,,
६.	इन्द्र ,,	सामायिक	शुक्ल ,, ,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७	स्वयंभू	ज्ञानावरणीय—निवृत्ति	मल्लिनाथ ध्यान (हरित)
८	स्वरोचिष्	दर्शनावरणीय निवृत्ति	नेमिनाथ ध्यान (श्याम-सुन्दर)
९	औतपी	वेदनीय-निवृत्ति	वासुपूज्य—ध्यान (लाल)
१०	तामस	मोहनीय ,,	चन्द्रप्रभ, सुविधि—पुष्पदन्त-ध्यान (शुक्ल)
११	दैवत	आयुष्य ,,	ऋषभादिक १६—तीर्थंकर-ध्यान (पीत)
१२	चाक्षुष	नाम ,,	पार्श्वनाथ-ध्यान (हरित)
१३	वैवस्वत	गोत्र ,,	मुनिसुव्रत-ध्यान (श्याम)
१४	सावर्णी	अंतराय ,,	पद्मप्रभ-ध्यान (लाल)

(१२) चक्र ग्रन्थियाँ १४ : (१३) सूत्र १४ : (१४) रत्न १४

१	मूलाधार चक्र	घड्धश्	धन्वन्तरि
२	स्वाधिष्ठान ,,	जबगड्दस्	पांचजन्य शंख
३	मणिपूर ,,	खफछठथ—चटतव्	चंद्रमा
४	अनाहत ,,	कपय्	विष
५	विशुद्धि ,,	शषसर्	अमृत
६	आज्ञा-चक्र ,,	हल्	ऐरावत गज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७	ज्ञान ग्रन्थि	अइउण्	लक्ष्मी
८	दर्शन ,,	ऋलृक्	उच्चैश्रवा
६	शांति ,,	एओङ्	कामधेनु
१०	सुख ,,	ऐऔच्	कल्पवृक्ष
११	जीवन ,,	हयवरट्	कौस्तुभ मणि
१२	सौन्दर्य ,,	लण्	रंभा
१३	साम्य ,,	ञमङणनम्	वारुणी
१४	वीर्य ,,	झभञ्	शार्ङ्ग धनुष

सूचना

इस प्रकार स्थानांग एवं समवायांग द्वारा १४ गुणस्थान और १४ रज्जु लोक से ऊपर उठकर अन्तकृत्दशा—यानी संपूर्ण कर्मों के अन्त करने के बाद जो दशा प्राप्त होती है उसकी सिद्धि हो सकती है। योगवाशिष्ठ में भी १४ श्रेणियाँ बताई गई हैं। १४ भुवनों का वर्णन भी स्थान-स्थान पर आता है। इस प्रकार जहाँ जहाँ १४ संख्याएं मिलें वहाँ वहाँ पर क्रमशः कहाँ कहाँ उनसे कौन-कौनसा तात्पर्य लेना चाहिये उसे अच्छी प्रकार समझा जा सकता है। सम्यक्-दृष्टि के लिये मिथ्या-सूत्र भी सदुपयोगी हैं और मिथ्या-दृष्टि, सम्यक्-सूत्रों का भी दुरुपयोग करता है। उसी प्रकार सम्यक्दृष्टि को आस्रव भी संवर का फल देता है और मिथ्यादृष्टि का संवर भी आस्रव का कारण बनता है। तत्व तो केवली गम्य ही है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिशिष्ट २

इस सुर-दुर्लभ मनुज-जन्म की सफलता के लिये अपने देह में जो प्रधान द्वादश अंग हैं उनमें चौबीस स्वगत-भेद-संपन्न द्वादश वृक्ष लगाने हैं।

बीज, पत्र, पुष्प और फल आदि अंगों की हृदय-हारिणी शोभा से संयुक्त हमारे जीवन का उद्यान हरा-भरा हो जायगा।

संख्याओं का सूक्ष्म निरीक्षण करके सभी वृक्षों के अंगों का परस्पर क्रम ध्यान रखते हुए गंभीर विचार पूर्वक संबंध मिलान करते जायेंगे तो स्वयम् ही हृदय में तत्व का परम साक्षात्कार हो जायगा और जीवन द्वादश वृक्षों की छाया में उत्कृष्ट विश्राम प्राप्त करेगा।

दृष्टांत के तौर पर पहले ही वृक्ष का अत्यन्त संक्षिप्त मनन दिशा-निर्देश के लिये बता रहा हूँ :—

हृदय के क्षेत्र में 'क्रीं' नामक योग-बीज बोकर अरिहंत—पद-भक्ति द्वारा जल-सिंचन करना चाहिये। प्रश्न-व्याकरण का अंकुर लगेगा यानी प्रत्येक मन-वचन-काया की योग-प्रवृत्ति के समय यह प्रश्न हुआ करेगा कि यह कार्य अरिहंत शासन के विरुद्ध तो नहीं है न ? यानी वैर-वर्द्धक तो नहीं है न ? संसार की सब वस्तुएँ अनित्य समझने की भावना का स्कन्ध लगते ही धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान की शाखा निकल आयगी। पुण्य प्रभाव खिलते ही पत्र-पुष्प-संपन्न प्रशाखाएँ शोभायमान होंगी। उपदेश के फल से अनुकंपामय करुण-रस का पान होगा। चंद्र की शीतल ज्योति का दर्शन होते ही मन निर्मल दर्पण के समान बन जायगा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसमें दृष्टि पूर्वक आत्म-अनुभव हो सके। अन्त में इष्ट देव चन्द्रप्रभ भगवान श्री चन्द्रमौलीश्वर महादेव के अनुग्रह से नूनम् निश्चय ही 'उपकार' 'उपकार' 'उपकार' ऐसा अव्यय उद्गार निकलेगा।

द्वादश ध्यान–वृक्षों के चौबीस अंग

१ क्षेत्र [१२ नर-देह के अंग]

१ हृदय २ मस्तक ३ भुजा ४ नाभि ५ आँख ६ आसन ७ कान ८ नाक ९ जीभ १० कंठ ११ ललाट १२ भ्रू-मध्य।

२ बीज [१२ मंत्राक्षर]

१ क्रीं (योग) २ अर्हं (परम) ३ ह्रीं (शक्ति) ४ क्लीं (काम) ५ ॐ (मूल) ६ ऐं (गुरु) ७ श्रीं (रमा) ८ ह्लीं (रक्षण) ९ ट्रीं (तेज) १० स्त्रीं (शान्ति) ११ फट्फट् स्वाहा (तत्) १२ हुम् स्वधा (तत्व)।

३ जल–सिंचन [१२ पद-भक्ति]

१ अरिहंत २ सिद्ध ३ आचार्य ४ उपाध्याय ५ सर्वसाधु ६ दर्शन ७ ज्ञान ८ चारित्र्य ९ तप १० देव ११ गुरु १२ धर्म।

४ अंकुर [१२ आगमांग]

१ प्रश्न-व्याकरण २ अंतकृत् ३ भगवती ४ समवाय ५ आचार ६ स्थान ७ ज्ञाता-धर्म-कथा ८ उपासक ९ विपाक १० अनुत्तरोपपातिक ११ सूत्रकृत् १२ दृष्टिवाद।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ स्कन्ध [१२ अनुप्रेक्षा-भावना]

१ अनित्य २ अशरण ३ संसार ४ एकत्व ५ अन्यत्व ६ अशुचित्व ७ आस्रव ८ संवर ९ निर्जरा १० लोकस्वभाव ११ बोधि-दुर्लभ १२ धर्म-स्वाख्यान।

६ शाखा [१२ तप-निर्जरा]

१ ध्यान २ कायोत्सर्ग ३ वैयावृत्त्य (सेवा) ४ स्वाध्याय ५ विनय ६ प्रायश्चित्त ७ प्रतिसंलीनता ८ कायक्लेश ९ रस-परित्याग १० वृत्ति-संक्षेप ११ अवमौदर्य १२ अनशन।

७ प्रशाखा [१२ सत्क्रियाएँ]

१ खिलना २ देखना ३ खेलना ४ हरना ५ खुलना ६ दीखना ७ दूखना ८ करना ९ धरना १० मानना ११ जानना १२ पालना।

८ पत्र [१२ भाव]

१ प्रभाव २ स्वभाव ३ सर्वभाव ४ शुद्ध भाव ५ परम भाव ६ प्रिय भाव (परभाव) ७ महत्—कुभाव ८ विभाव (जगद्भाव) ९ विश्वभाव १० देवभाव ११ गुरुभाव १२ धर्म भाव।

९ पुष्प [१२ तत्व]

१ पुण्य २ जीव ३ संवर ४ निर्जरा ५ मोक्ष ६ अजीव ७ पाप ८ आस्रव ९ बंध १० देव ११ गुरु १२ धर्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१० फल [१२ लक्ष्य]

१ उपदेश २ स्वदेश ३ संदेश ४ निर्देश ५ उद्देश ६ विदेश ७ दुर्देश ८ आदेश ९ कुदेश १० दिनेश ११ राजेश १२ राजराजेश।

११ रस [१२ अनुभाग]

१ करुण २ शांत ३ वीर ४ भयानक ५ वीभत्स ६ अद्‌भुत ७ हास्य ८ शृंगार ९ रौद्र १० भक्ति ११ वात्सल्य १२ रुद्र । मधु

१२ ग्रह-प्रकाश [१२ ज्योतियाँ]

१ चंद्र २ सूर्य ३ मंगल ४ बुध ५ गुरु ६ शुक्र ७ शनि ८ राहु ९ केतु १० वरुण ११ कुबेर १२ यम।

१३ वातावरण [१२ प्रयोजन]

१ मन निर्मल २ बुद्धि निश्चल ३ अहंकार सरल ४ चित्त सकल ५ जीव प्रबल ६ आत्मा असल ७ अक़्ल ८ अमल ९ अटल १० मंगल ११ समस्याओं का हल १२ जीवन सफल।

१४ मंगल [१२ प्रतीक]

१ दर्पण २ गदा ३ माला ४ लक्ष्मी ५ शंख ६ सद्‌ग्रन्थ ७ कुंभ-कलश ८ चक्र ९ दीपदान १० नन्दावर्त ११ श्रीवत्स १२ स्वस्तिक ।

१५ तृप्ति [१२ स्वधर्म]

१ हृष्टि २ व्यष्टि ३ समष्टि ४ तुष्टि ५ परमेष्ठी ६ दृष्टि ७. पुष्टि ८ वृष्टि ९ सृष्टि १० इष्ट ११ ज्येष्ठ १२ श्रेष्ठ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६ अव्यय [१२ अविभक्त ध्रौव्य]

१ नूनम् २ अहं ३ वरम् ४ शम् ५ ॐ ६ स्वयं ७ किम् ८ कथं ९ एवं १० प्रत्यक् ११ पराक् १२ प्राक्।

१७ उद्गार [१२ डकार]

१ उपकार २ आधार ३ आचार ४ विचार ५ संस्कार ६ व्यवहार ७ सुधार ८ विहार ९ स्वीकार १० संसार ११ विस्तार १२ उद्धार।

१८ इष्ट देव [१२ ध्येय]

१ श्री चंद्रप्रभ भगवान (चंद्र मौलीश्वर महादेव)
(श्वेत रंग) (मोहम्मद)

२ श्री पद्मप्रभ भववान (सूर्यनारायण)
(लाल रंग) (ईसा-जरथुस्त-हनुमान)

३ श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, सुपार्श्व, शीतल, श्रेयांस, विमल, अनन्त, धर्म, कुंथु, अर, नमि, शांति, और वर्द्धमान भगवान, (१६)
(पीतरंग)

[व्यास, जैमिनी, गौतम, कणाद, कपिल, पतंजलि, परशुराम, वामन, बराह, दत्त, मनु, कल्कि, नारद, सनत्कुमार, वशिष्ठ, नृसिंह, (१६)]

४ श्री पार्श्वनाथ भगवान् (विष्णु) (हरित वर्ण) (कन्फ्यूशस)

५ श्री नेमिनाथ भगवान् (कृष्ण)
(श्याम-सुन्दर वर्ण) (हजरत अली)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६ श्री सुविधिनाथ— } (ब्रह्मदेव)
पुष्पदंत भगवान (नानक)
(केशरिया में श्वेत)

७ श्री मल्लिनाथ भगवान (जगदम्बा)
(जामुनिया में हरित) (राबिया)

८ श्री मुनिसुव्रत भगवान (राम)
(आसमानी में श्याम सुन्दर) (सुकरात)

९ श्री वासुपूज्य भगवान (गणेश)
(कसुम्भली में लाल) (बुद्ध)

१० श्री पंचदेव (एकलिंग, श्रीनाथ, चतुर्भुज
केशरियानाथ, शंखेश्वर (ख्वाजा)
श्री आदिमाताजी)

११ श्री गुरु-स्थान (ब्राह्मी) (दादा चतुष्टय)

१२ श्री धर्मस्थान (सुन्दरी) (लाओत्से)

१६ रक्षण [१२ ग्रह]

१ अनुग्रह २ स्वग्रह ३ सम्यक्ग्रह ४ निग्रह ५ परमग्रह ६ परग्रह ७ परिग्रह ८ आग्रह ९ विग्रह १० देवग्रह ११ गुरुग्रह १२ धर्मग्रह ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२० लाभ [१२ भव]

१ अनुभव २ स्वभव ३ सम्यक्भव ३ शुद्धभव ५ परमभव ६ परभव ७ कुभव ८ परिभव ९ विभव १० देवभव ११ गुरुभव १२ धर्मभव।

२१ अधिकारी [१२ राशि]

१, मेष २, वृषभ ३, मिथुन ४, कर्क ५, सिंह ६, कन्या ७, तुला ८ वृश्चिक ९ धनु १० मकर ११ कुम्भ १२ मीन।

२२ काल [१२ मास]

१, चैत्र २, वैशाख ३, ज्येष्ठ ४, आषाढ़ ५, श्रावण ६, भाद्रपद ७, आश्विन ८, कार्तिक ९, मार्गशीर्ष १०, पौष ११, माघ १२, फाल्गुन।

२३ संकल्प [१२ व्रत]

१, प्राणातिपात—विरमण (अहिंसांश) २, मृषावाद—विरमण (सत्यांश) ३, अदत्तादान—विरमण (अचौर्यांश) ४, मैथुन—विरमण (ब्रह्मचर्यांश) ५, परिग्रह परिमाण (अपरिग्रहांश) ६, दिशि ७, उपभोग-परिभोग-परिमाण ८, अनर्थदण्ड विरमण ९, सामायिक १०, देशावगासिक ११, परिपूर्ण पौषध १२, अतिथि—संविभाग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२० लाभ [१२ भव]

१ अनुभव २ स्वभव ३ सम्यक्‌भव ३ शुद्धभव ५ परमभव ६ परभव ७ कुभव ८ परिभव ९ विभव १० देवभव ११ गुरुभव १२ धर्मभव ।

२१ अधिकारी [१२ राशि]

१, मेष २, वृषभ ३, मिथुन ४, कर्क ५, सिंह ६, कन्या ७, तुला ८ वृश्चिक ९ धनु १० मकर ११ कुम्भ १२ मीन ।

२२ काल [१२ मास]

१, चैत्र २, वैशाख ३, ज्येष्ठ ४, आषाढ़ ५, श्रावण ६, भाद्रपद ७, आश्विन ८, कार्तिक ९, मार्गशीर्ष १०, पौष ११, माघ १२, फाल्गुन ।

२३ संकल्प [१२ व्रत]

१, प्राणातिपात—विरमण (अहिंसांश) २, मृषावाद—विरमण (सत्यांश) ३, अदत्तादान—विरमण (अचौर्यांश) ४, मैथुन—विरमण (ब्रह्मचर्यांश) ५, परिग्रह परिमाण (अपरिग्रहांश) ६, दिशि ७, उपभोग-परिभोग-परिमाण ८, अनर्थदण्ड विरमण ९, सामायिक १०, देशावगासिक ११, परिपूर्ण पौषध १२, अतिथि—संविभाग ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४ नाम [१२ विशेषण]

१, मित्र २, रवि ३, सूर्य ४, भानु ५ खग ६, पूषा ७, हिरण्यगर्भ ८, मरीचि ९, आदित्य १०, सविता ११, अर्क १२, भास्कर।

श्री शक्ति-पीठ १४

१	श्री	आदिमाता जी	[बड़ी सादड़ी]	(प्रेम)
२	,,	सीता जी	[सीतामाताजी]	(सत्य)
३	,,	ब्राह्मी जी	[वल्लभनगर]	(ज्ञान)
४	,,	सुन्दरी जी	[डूँगला—श्रीअयरवाजी]	(आनन्द)
५	,,	काली जी	[चितौड़गढ़]	(आत्मा)
६	,,	अम्बिका जी	[उदयपुर]	(जीव)
७	,,	आशांबरीजी	[आवरीमाता]	(अहंकार)
८	,,	सरस्वती जी	[अजारी]	(बुद्धि)
९	,,	रुक्मिणी जी	[पंढरपुर]	(मन)
१०	,,	धूणी माता जी	[धूणी माता]	(आकाश)
११	,,	पार्वती जी	[पूना]	(वायु)
१२	,,	दक्षिणेश्वरी जी	[कलकत्ता]	(अग्नि)
१३	,,	सामुद्री जी	[बम्बई]	(जल)
१४	,,	इलादेवी जी	[भँवर माता छोटी सादड़ी]	(पृथ्वी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री भगवत्—पीठ १४

	१ श्री	पीतांबररायजी—श्रीनाथजी (७)	(प्रेम)
	२ ,,	रूपनारायण—रघुनाथ जी (८)	(सत्य)
	३ ,,	पुष्करनाथ जी (६)	(ज्ञान)
घ	४ ,,	ऋषभनाथ जी (३)	(आनन्द)
	५ ,,	महाकालेश्वर जी	(आत्मा)
	६ ,,	जगदीश्वर जी	(जीव)
	७ ,,	ॐकारेश्वर जी (२)	(अहंकार)
	८ ,,	रणथंभौर—गणेश्वरजी (९)	(बुद्धि)
	९ ,,	विट्ठलनाथ जी (५)	(मन)
	१० ,,	बद्रीनाथ जी	(आकाश)
	११ ,,	एकलिंग जी (१)	(वायु)
	१२ ,,	श्री रामेश्वर जी	(अग्नि)
	१३ ,,	अनन्त भगवान—चारभुजा जी (४)	(जल)
	१४ ,,	द्वारिकाधीश जी	(पृथ्वी)

सूचना—

मध्य में जो संख्याएँ दीं हैं वे क्रमशः ९ तीर्थ स्थान हैं। शक्ति पीठ में इसी प्रकार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरुजी म्हाने आछ्या आप रिझाया।
अणी री घट ही में गम पाया॥
बुगला रा सुभाव बदलाया, कागा हंस बणाया।
बिरख वण्यो वारूद चित्र ज्यूँ, अनुभव आग लगाया॥
सूरज शीप ऊपरे ऊग्यो, चंद प्रकाश सवाया।
तारा रा अनुपम प्रकाश में, अचरज घणा दिखाया॥
अठी पड़े तो ऊंडो कूड़ो, अठी पड़े तो खाड़ो।
अठी वठी ने कठी न देखे, पावे पद परभारो॥
गुरु-गम रो गेलो न्यारो।
ईं ने जाणे जाणणवारो॥

❀

बाहर के'वे बावरा, भीतर कहे अजाण।
बाहर-भीतर एक-सो, 'ऊद्या' अलख पछाण॥
अलख कहे सो आलसी, लख के'वे नादान।
अलख-लखी रो आसरो, 'ऊद्या' अलख पछाण॥

—राजर्षि चतुरसिंहजी

'ऊद्या' डाँगी ने कही, अलख पचीसी आप।
'सूर्यचंद' डाँगी सुणी, लखी उघाड़ी छाप॥
लखी उघाड़ी छाप दृष्टि रो वाद दिखायो।
सर्व-स्वभावोद्धार-सूत्र चौड़े बतलायो॥
चतुर राजराजेश-युक्त राजर्षि कहायो।
परम-समान गुमान-सिंह—गुरु शरणे आयो॥
विकल-चित्त रो हर लियो सघलो ही संताप।
ऊद्या' डाँगी ने कही अलख-पचीसी आप॥
सूर्यचंद' डाँगी सुणी, लखी उघाड़ी छाप॥

—सूरजचंद डाँगी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान
पुस्तक सं० ....
दिनांक ....
नरिया (का. हि. वि.) वाराणसी

राजविद्या राजगुह्यम् पवित्रमिदमुत्तमम् ।
प्रत्यक्षावगमम् धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ।।

—श्रीमद्‌भगवत गीता

श्री राजराजेश्वर-योग नामवाली यह राजाओं की अत्यन्त गोपनीय विद्या
बहुत पवित्र है । प्रत्यक्ष फल देनेवाली है, सरल भी है
और धारण करने से कभी पतित नहीं होने देती ।
नित्य स्वास्थ्यप्रद है ।

—योगेश्वर श्रीकृष्ण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi